वर्ष : 07, अंक : 11
नई दिल्ली
मंगलवार, 04 अगस्त से 10 अगस्त-2020
मूल्य रू 3/-
पृष्ठ : 8

ओपन सर्च

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

RNI No. : DELHIN/2014/56301

खबर दुनियाँ की, आइना समाज का

E-mail | opensearchdelhi@gmail.com
Facebook | https://www.facebook.com/opensearch.co.in
Website | www.opensearch.co.in

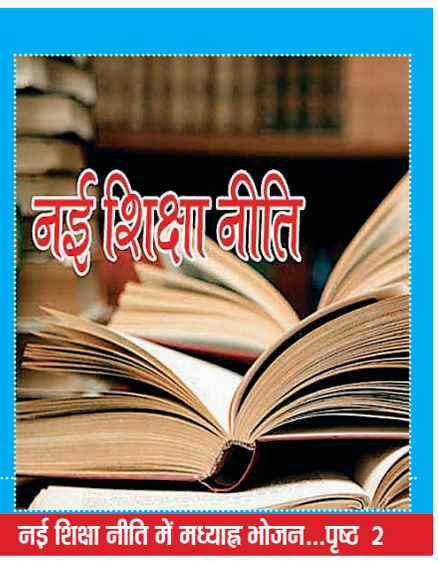

नई शिक्षा नीति में मध्याह्न भोजन...पृष्ठ 2

एक नज़र

भूमि पूजन के लिये मोदी ने ली परम रामभक्त हनुमान की आज्ञा

अयोध्या। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को अयोध्या में ऐतिहासिक हनुमान गढ़ी मंदिर में परम रामभक्त हनुमान जी से राम मंदिर निर्माण के लिये भूमि पूजन की आज्ञा मांगी। श्री मोदी आज यहां सुबह करीब साढ़े 11 बजे साकेत डिग्री कालेज हेलीकाप्टर से पहुंचे जहां से उनका काफिला हनुमानगढ़ी के लिये रवाना हो गया। प्रधानमंत्री ने हनुमानगढ़ी मंदिर पहुंच कर हनुमान जी की विधिवत पूजा अर्चना की और आरती उतारी। आरती माथे पर लगाने के बाद उन्होने दक्षिणा रख रामभक्त से भूमि पूजन की आज्ञा मांगी। इस दौरान दो गज की दूरी पर मास्क लगाये मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मौजूद थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंदिर की परिक्रमा की। जाने से पहले श्री मोदी ने वहां मौजूद महंत को प्रणाम कर प्रस्थान करने की अनुमति मांगी। महंत ने उन्हे साफा पहनाया और रामनाम अंकित गमझा भेंट किया। श्री मोदी साफा पहने हुये मंदिर परिसर से बाहर आये और उनका काफिला श्रीरामजन्मभूमि की ओर रवाना हो गया।

घृणा और क्रूरता से प्रकट नहीं हो सकते राम : राहुल

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अयोध्या में भगवान राम मंदिर का शिलान्यास करने के तत्काल बाद कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा कि राम मर्यादा पुरुषोत्तम है और वह घृणा तथा क्रूरता से कभी प्रकट नहीं होते। श्री गांधी ने ट्वीट किया, ÷मानवता के मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम सर्वोत्तम मानवीय गुणों का स्वरूप हैं। वे हमारे मन की गहराइयों में बसी मानवता की मूल भावना हैं। उन्होंने कहा, राम प्रेम हैं, वे कभी घृणा में प्रकट नहीं हो सकते। राम करुणा हैं, वे कभी क्रूरता में प्रकट नहीं हो सकते। राम न्याय हैं, वे कभी अन्याय में प्रकट नहीं हो सकते। इससे पहले कांग्रेस संचार विभाग के प्रमुख रणदीप सिंह सुरजेवाला ने कहा, राम मंदिर भूमिपूजन की शुभकामनाएँ। आशा है कि त्याग, कर्तव्य, करुणा, उदारता, एकता, बंधुत्व, सद्भाव, सदाचार के रामबाण मूल्य जीवन पथ का रास्ता बनेंगे। जय सिया राम।

ओडिशा में भारी बारिश, रविवार तक बरसात जारी रहने की संभावना

भुवनेश्वर। बंगाल की खाड़ी के ऊपर बने कम दबाव के क्षेत्र के कारण ओडिशा में भारी बारिश हो रही है। मौसम केंद्र ने बुधवार को पूर्वानुमान जताया कि बारिश रविवार तक जारी रह सकती है। भुवनेश्वर स्थित मौसम विज्ञान केंद्र ने कहा कि कम दबाव का क्षेत्र अभी उत्तर ओडिशा और पश्चिम बंगाल तट से सटे बंगाल की खाड़ी के उत्तर पश्चिम में है। इस वजह से ओडिशा के उत्तरी तथा दक्षिणी तटीय इलाकों और दक्षिणी अंदरूनी क्षेत्रों के अधिकतर हिस्सों में बारिश हो रही है। केंद्र ने कहा कि बरसात अगले कुछ और दिन तक जारी रह सकती है, क्योंकि नौ अगस्त को उत्तरी बंगाल की खाड़ी से सटे पश्चिम मध्य हिस्से के ऊपर नया कम दबाव का क्षेत्र बनने की संभावना है।

अयोध्या में मोदी ने किया भूमिपूजन

पूरा भारत हुआ राममय, मोदी ने अयोध्या में रखी राम मंदिर की आधारशिला

अयोध्या.एजेंसी

पौराणिक त्रेतायुग में इक्ष्वाकु वंश की राजधानी रही अयोध्या में भगवान श्री रामचंद्र की जन्मभूमि पर अधिकार को लेकर करीब पांच शताब्दियों के कड़े संघर्ष के बाद आज शांतिपूर्ण ढंग से नये भव्य मंदिर का निर्माण औपचारिक रूप से आरंभ हो गया।

टेलीविजन के कैमरे के माध्यम से साक्षी बने देश-विदेश के करोड़ों लोगों की भावनाओं के ज्वार के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंदिर की नींव में चांदी की आधारशिला रखी। श्री मोदी देश के पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने अयोध्या में रामलला के दर्शन किये। न केवल भारत बल्कि अनेक देशों में रहने वाले प्रवासी भारतीय समुदाय के लोगों ने मोबाइल स्क्रीन, टीवी एवं कम्प्यूटर स्क्रीन पर इस कार्यक्रम को देखा और अपने-अपने घरों में दीये जला कर श्रद्धा प्रकट की। इस मौके पर प्रधानमंत्री ने कहा कि राम जन्मभूमि आज मुक्त हुई है और आज पूरा भारत राममय हो गया है। ये मंदिर आने वाली पीढ़ियों को आस्था, श्रद्धा, और संकल्प की प्रेरणा देता रहेगा।

श्री राम मंदिर तीर्थ क्षेत्र न्यास द्वारा आयोजित इस भूमिपूजन कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी वायुसेना के विमान से लखनऊ पहुंचे और वहां से हेलीकॉप्टर द्वारा अयोध्या पहुंचे। राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं न्यास के पदाधिकारियों ने उनका स्वागत किया।

सुनहरे रंग के कुर्ते, भगवा अंगवस्त्र और सफेद धोती पहने बढ़ी हुई दाढ़ी एवं बालों में श्री मोदी राजनेता कम एक संत अधिक नजर आ रहे थे। वह सबसे पहले हनुमानगढ़ी पहुंचे और अयोध्या के सेनापति से भगवान के मंदिर के निर्माण की आज्ञा मांगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ हनुमान जी के दर्शन-पूजन के बाद वहां के मुख्य पुजारी ने श्री मोदी को आशीर्वाद स्वरूप चांदी का मुकुट पहनाया।

उसके बाद श्री मोदी श्रीराम जन्मभूमि परिसर में पहुंचे और वहां उनका स्वागत न्यास के सदस्य एवं प्रधानमंत्री के पूर्व प्रधान सचिव नृपेन्द्र मिश्र ने की। प्रधानमंत्री सबसे पहले अस्थायी मंदिर में विराजित रामलला के दर्शन के लिए गये। वह दोनों हाथ ऊपर करके ज़मीन पर लेट गये और रामलला को साष्टांग प्रणाम किया। रामलला की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और पूर्ण भक्तिभाव से आरती की। उसके बाद श्री मोदी ने वहां भगवान विष्णु के प्रिय पारिजात वृक्ष की एक शाखा का रोपण किया।

मध्याह्न करीब 12 बज कर सात मिनट पर प्रधानमंत्री भूमिपूजन स्थल पहुंचे। श्री रामजन्म भूमि के गर्भगृह वाले स्थान पर करीब 40 मिनट तक चले अनुष्ठान के बाद श्री मोदी ने 12 बजकर 44 मिनट 32 सेकेंड पर गर्भगृह में खोदे गये एक गड्ढे में रखी गयी चांदी की मुख्य कूर्मशिला पर मंत्रोच्चार के बीच गंध, अक्षत एवं पुष्प अर्पण किये। करीब 22 किलोग्राम 600 ग्राम वजन की मुख्य शिला के साथ ही पत्थर की आठ उपशिलाएं भी नींव में रखीं गयीं थी। इस मौके पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत, राज्यपाल श्रीमती पटेल, मुख्यमंत्री तथा अयोध्या के पूर्व राजा एवं न्यास के सदस्य डॉ. अनिल मिश्रा सपत्नीक विराजमान थे। भूमिपूजन के पश्चात अपने साथ लाये गये सोने का एक छोटा कलश भी प्रधानमंत्री ने नींव में अर्पित किया। डॉ भागवत और श्रीमती पटेल ने भी नींव में अपने साथ लाये उपहार अर्पित किये। भूमिपूजन के अनुष्ठान में श्री मोदी ने राष्ट्रवासियों के प्रतिनिधि के रूप में यजमान बन कर शिरकत की। न्यास के प्रमुख महंत नृत्यगोपाल दास, कोषाध्यक्ष गोविंददेव गिरि महाराज एवं महामंत्री चंपत राय भी मौजूद थे। इस कार्यक्रम में कोरोना महामारी के कारण बहुत कम लोगों को निमंत्रित किया गया था। अधिक आयु एवं संक्रमण के खतरे के मद्देनज़र रामजन्मभूमि आंदोलन के नायक पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी, पूर्व भाजपा अध्यक्ष डॉ. मुरलीमनोहर जोशी, उच्चतम न्यायालय में श्रीराम जन्मभूमि का मुकदमा लड़ने वाले जाने माने वकील के. परासरण से नहीं आने का आग्रह किया था।

भूमि पूजन के बाद अयोध्या में दिवाली

अयोध्या में भव्य राम मंदिर के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भूमि पूजन के बाद शिलान्यास किया। अब मंदिर निर्माण शुरू हो जाएगा। वहीं आज अयोध्या में हर तरफ दिवाली मनाई जा रही है। यूपी के सीएम योगी दित्यनाथ ने पटाखे फोड़कर खुशी का इजहार किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा राम मंदिर की आधारशिला रखना नए युग का प्रारंभ है और यह युग 'रामराज्य' और 'नए भारत के निर्माण' का है। यह नया युग लोककल्याण के लिए तपोमयी सेवा का है। यह युग रामराज्य का है। यह युग प्रभु श्री राम के आदर्शों के अनुरूप नए भारत के निर्माण का है।

भारतीय संस्कृति की आधुनिकता का प्रतीक होगा राम मंदिर : मोदी

देश दुनिया के करोड़ो रामभक्तों के राम मंदिर के सपने को साकार करते हुये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि अयोध्या में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम का मंदिर समृद्धता से परिपूर्ण भारतीय संस्कृति की आधुनिकता का परिचायक होगा और मंदिर के बनने से न सिर्फ पौराणिक नगरी की भव्यता बढ़ेगी बल्कि इस क्षेत्र का पूरा अर्थतंत्र भी बदल जाएगा। श्रीराम का मंदिर भारतीय संस्कृति का आधुनिक प्रतीक बनेगा। यहां हर क्षेत्र में नए अवसर बनेंगे। पूरी दुनिया प्रभु राम और माता जानकी का दर्शन करने आएगी। श्री मोदी ने कहा कि राममंदिर के निर्माण की यह प्रक्रिया राष्ट्र को जोड़ने का उपक्रम है। यह विश्वास को विद्यमान से जोड़ने का, नर का नारायण से जोड़ने का, लोक का आस्था से जोड़ने का, वर्तमान का अतीत से जोड़ने का और स्वयं को संस्कार से जोड़ने का महोत्सव है।

opensearch

भारतीय संस्कृति, सभ्यता के इतिहास में जुड़ा एक स्वर्णिम अध्याय : अमित शाह

नयी दिल्ली.एजेंसी।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पूर्व अध्यक्ष एवं केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने अयोध्या में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के भूमि पूजन को देश के लिए ऐतिहासिक एवं गौरवपूर्ण पल बताया और कहा कि इससे भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय लिखा गया है और आज एक नये युग की शुरुआत हुई है। दिल्ली के समीप हरियाणा के गुरुग्राम में एक निजी अस्पताल में कोरोना संक्रमण का उपचार करा रहे श्री शाह ने अपने संदेश में कहा, ÷आज का दिन भारत के लिए एक ऐतिहासिक व गौरवपूर्ण दिन है।

प्रभु श्री राम की जन्मभूमि पर प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा भव्य राम मंदिर का भूमि पूजन व शिलान्यास किया गया, जिसने महान भारतीय संस्कृति व सभ्यता के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय लिखा है और एक नए युग की शुरुआत की है।÷

गृह मंत्री ने कहा, ÷अयोध्या में राम मंदिर निर्माण सदियों से दुनिया भर के हिंदुओं की आस्था का प्रतीक रहा है।

आज श्री मोदी और श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ने राम मंदिर का भूमिपूजन करके करोड़ों लोगों की आस्था को सम्मान देने का काम किया है, इसके लिए मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

उन्होंने कहा कि प्रभु श्री राम जी के आदर्श एवं विचार भारतवर्ष की आत्मा में बसते हैं। उनका चरित्र एवं जीवन दर्शन भारतीय संस्कृति की आधारशिला है। राम मंदिर निर्माण से यह पुण्यभूमि अयोध्या पुनः विश्व में अपने पूर्ण वैभव के साथ जग उठेगी। धर्म और विकास के समन्वय से रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होंगे। उन्होंने कहा, ÷श्री राम मंदिर निर्माण असंख्य नाम-अनाम रामभक्तों के सदियों के निरंतर त्याग, संघर्ष, तपस्या और बलिदान का परिणाम है।

आज के दिन मैं उन सभी तपस्वियों को नमन करता हूँ जिन्होंने इतने वर्षों तक सनातन संस्कृति की इस अमूल्य धरोहर के लिए संघर्ष किया।

LOC पर बंदूक के साथ महिला सैनिक तैनात, खास मकसद के तहत दी गई जिम्मेदारी

श्रीनगर.एजेंसी

एलओसी पर बंदूक के साथ महिला सैनिकों की तैनाती हो गई है। ये अपने आप में एक नया रिकॉर्ड है। जम्मू कश्मीर की कुपवाड़ा में दल हजार फीट की ऊंचाई का इलाका साधना पास का वो इलाका जहां पर पहली बार महिला सैनिकों की ड्यूटी लगाई गई है। पाकिस्तान की सीमा से सिर्फ दस-बारह किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस इलाके में चौकस निगाहों से महिला जवान इलाके के चप्पे-चप्पे पर नजर रख रही हैं। लगभग 30 महिला सैनिकों का नेतृत्व कैप्टन गुरसिमरन कौर द्वारा किया जा रहा है। महिला दल का नेतृत्व कर रही कैप्टन कौर अपने परिवार की थर्ड जेनरेशन महिला सैन्य अफसर हैं। उनके पिता और दादा भी सेना में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। साधना पास पर तैनात ये महिला जवान असम राइफल्स का हिस्सा हैं। इन्हें खास मकसद के तहत जम्मू कश्मीर में तैनाती दी गई है। आर्मी के टॉप ऑफिशल के अनुसार असम राइफल्स की महिला सैनिकों की तैनाती स्मगलिंग को रोकने के लिए की गई है। इस इलाके से स्मलिंग की घटनाओं के इनपुट सेना को ज्यादा मिल रहे थे। उस रिपोर्ट के अंतर्गत महिला, बच्चों और लड़कियों का इस्तेमाल किया जा रहा है। जिनको सेना के जवान सही से सर्च नहीं कर पाते थे।

800 महिलाओं को मिलिट्री पुलिस में शामिल करने की योजना

13 लाख सैनिकों की क्षमता वाली इंडियन आर्मी 1990 से सीमित संख्या में महिलाओं को ऑफिसर लेवल पर ही शामिल कर रही है। महिलाओं को इन्फेंट्री के फाइटिंग आर्म्स, आर्मर्ड कॉर्प्स, मेकनाइज्ड इन्फेंट्री और आर्टिलरी में शामिल नहीं किया जाता रहा। पिछले वर्ष आर्मी ने 50 महिलाओं को कॉर्प्स ऑफ मिलिट्री पुलिसमें शामिल किया था जो अभी ट्रेनिंग के दौर से गुजर रही हैं। इंडियन आर्मी की योजना करीब 800 महिलाओं को मिलिट्री पुलिस में शामिल करने की है।

राजधानी दिल्ली में कोरोना रिकवरी दर में आंशिक कमी

नयी दिल्ली.एजेंसी

राजधानी दिल्ली में कोरोना वायरस (कोविड-19) महामारी से बुधवार को उस समय चिंता की लहर दौर गयी जब इस वायरस से संक्रमण के 1076 नये मामले सामने आये और केवल 890 मरीज संक्रमण से मुक्ति पाने में कामयाब रहे। राहत की बात यह भी है कि मरीजों के स्वस्थ होने की दर बढ़कर 90 फीसदी के करीब पहुंच गयी है। इससे पहले मंगलवार को केवल 674 नये मामले सामने आये थे जबकि सोमवार को भी एक हजार से कम 805 नये मामले सामने आये थे। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्रालय की तरफ से जारी बुलेटिन के मुताबिक पिछले 24 घंटों में 1076 नये मामलों की पुष्टि होने के साथ ही संक्रमितों का आंकड़ा 1,40,232 तक पहुंच गया। इसी अवधि में 890 लोग इस वायरस के संक्रमण से निजात पाने से स्वस्थ होने वालों की संख्या बढ़कर 1,26,116 हो गयी है। कोरोना वायरस के संक्रमण से 11 और लोगों की मौत के बाद से मृतकों की संख्या बढ़कर 4,044 तक पहुंच गयी है। बुलेटिन के अनुसार राजधानी में कुल मरीजों में से 89.93 फीसदी मरीज स्वस्थ हो चुके हैं जबकि मंगलवार को रिकवरी दर 89.98 प्रतिशत जा पहुंची थी। इस प्रकार रिकवरी दर में आंशिक कमी दर्ज की गयी। राजधानी में निषिद्ध क्षेत्रों की संख्या में 18 की कमी आई है और यह अब घटकर481 रह गई है। मंगलवार को यह संख्या 499 तक पहुंच गयी थी। राजधानी में सक्रिय मामले बढ़कर 10072 हो गये हैं जो मंगलवार को 9897 रह गये थे। इनमें से 5227 मरीज होम आइसोलेशन में हैं। अस्पतालों के 13,578 बेड में 10,583 खाली हैं। पिछले 24 घंटों में 16,785 लोगों की कोरोना वायरस की जांच हुई। दिल्ली में कुल जांच अब करीब 11 लाख के करीब 10,99,882 हो चुकी है। दस लाख की आबादी पर जांच का औसत 57,888 है।

साढ़े तीन साल बाद कुछ ऐसा दिखेगा राम मंदिर

अयोध्या.एजेंसी

लगभग 500 वर्ष के लंबे इंतजार के बाद आखिरकार राम मंदिर का सपना पूरा होता हुआ दिखाई दे रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा भूमि पूजन के बाद अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण का कार्य शुरू हो जाएगा। इसके साथ ही राम जन्मभूमि के सैकड़ों साल के अंधेरे इतिहास का पटाक्षेप भी हो गया। 9 नवंबर 2019 को सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले के बाद राम मंदिर के निर्माण का रास्ता साफ हुआ। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार केंद्र सरकार ने भी राम मंदिर ट्रस्ट का गठन कर दिया। 5 अगस्त को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय संस्कृति और इतिहास को मजबूत बनाने वाली राम मंदिर की आधारशिला रखी। यह माना जा रहा है कि राम मंदिर काफी भव्य होगा और अपनी ओर लोगों को आकर्षित भी करेगा। अभी कहा जा रहा है कि राम मंदिर के निर्माण में लगभग 3 से साढ़े 3 साल का वक्त लगेगा। ऐसे में आप सभी के मन में यह जिज्ञासा जरूर है कि आखिर यह मंदिर कैसा होगा और प्रभु श्री राम अपने भाइयों के साथ कहां विराजेंगे। राम मंदिर निर्माण ट्रस्ट के द्वारा प्रस्तावित मॉडल की तस्वीरें जारी कर दी गई है। इसके बाद हर राम भक्त भव्य मंदिर की कल्पना कर अभिभूत हो रहा है। पहले रामलला के मंदिर के लिए विश्व हिंदू परिषद का पुराना मॉडल हम सबके सामने था। इसे चंद्रकांत सोमपुरा ने तैयार किया था। फिलहाल पुराने डिजाइन को बदला गया है। इस बदलाव के कारण अब मंदिर की ऊंचाई, आकार, क्षेत्रफल और बुनियादी संरक्षण में काफी परिवर्तन देखने को मिलेगा। सबसे पहले हम आपको यह बता दें कि यह मंदिर 3 मंजिला इमारत होगा जिसे वास्तु शास्त्र के हिसाब से बनाया जाएगा। इस मंदिर में रामलला का गर्भ गृह बनेगा। उसी के ऊपर मुख्य शिखर बनाया जाएगा। पहले की तुलना में इस बार राम मंदिर की ऊंचाई में 33 फीट की वृद्धि की गई है। यही कारण है कि पहले की तुलना में अब इमारत में एक और मंजिल को बढ़ाना पड़ा है।

अयोध्या : प्रधानमंत्री मोदी राम मंदिर भूमिपूजन से पहले हनुमानगढ़ी में करेंगे दर्शन

अयोध्या। प्रधानमंत्री मोदी राम मंदिर भूमिपूजन से पहले हनुमानगढ़ी में करेंगे दर्शन अयोध्या के राम मंदिर भूमि पूजन में बहुत कम दिन ही बाकी रह गए है। भूमिपूजन की तैयारिया जोरों शोरों से चल रही है। वही एक बात सामने आ रही है प्रधानमंत्री मोदी भूमिपूजन से पहले हनुमानगढ़ी में तीन मिनट दर्शन करेंगे। प्रधानमंत्री मोदी तीन घंटे अयोध्या के राम मंदिर में रहेंगे फिर 2 बजे करीब वाहा से रवाना होंगें। हनुमानगढ़ी के मुख्य पुजारी महंत राजू दास ने बताया, 5 अगस्त को प्रधानमंत्री भूमिपूजन के लिए आ रहे हैं, उन्होंने तय किया है कि पहले वो हनुमानगढ़ी में दर्शन करेंगे। यहां विशेष पूजा की व्यवस्था रहेगी। हमें 7 मिनट दिए गए हैं इसमें प्रधानमंत्री का आना-जाना शामिल है, करीब 3 मिनट पूजा में लगेंगे। पीएम मोदी हनुमानगढ़ी में पूजा करने के बाद मानस भवन में पूर्व-निर्मित मंदिर जाएंगे, जहां भगवान राम की मूर्ति रखी गई है। इसके बाद वह भूमि पूजन के लिए राम जन्मभूमि की ओर जाएंगे। कार्यक्रम स्थल पर एक छोटा मंच बनाया जा रहा है, जहां से प्रधानमंत्री संतों को संबोधित करेंगे। मंच पर सिर्फ 5 लोग ही रहेंगे। पीएम मोदी, यूपी की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत और मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास मंच पर मौजूद रहेंगे। अयोध्या में 5 अगस्त को राम मंदिर के भूमि पूजन के लिए मेहमानों की लिस्ट में फेरबदल किया गया है। इस मौके पर अब 170 लोगों को ही बुलाया जा रहा है। बीजेपी के कई नेताओं और संतों के नाम मेहमानों की लिस्ट से हटा दिए गए हैं। बीजेपी के वरिष्ठ नेता एल के आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी के नाम अब मेहमानों की लिस्ट में नहीं है। सूत्रों के मुताबिक दोनों नेताओं ने आने में असमर्थता जताई है। जबकि राम मंदिर आंदोलन से जुड़े नेताओं उमा भारती और कल्याण सिंह के नाम मेहमानों की लिस्ट में हैं। इसमें भैयाजी जोशी, दत्तात्रेय होसबोले, कृष्ण गोपाल, अनिल ओक, नागपुर से विमल और लखनऊ से क्षेत्र प्रचारक अनिल कुमार को भी बुलाया गया है। विश्व हिंदू परिषद से आलोक कुमार, दिनेश चंद्र और मिलिंद समेत छह लोगों को बुलाया जा रहा है।

महबूबा की जल्द हो रिहाई, राहुल बोले- नेताओं को बंदी बनाना लोकतंत्र को क्षतिग्रस्त करने जैसा

नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी केंद्र सरकार पर निशाना साधा है। वे कोरोना वायरस महामारी और भारत-चीन के बीच जारी तनाव को लेकर सरकार को आड़े हाथ लेते रहते हैं। अब रविवार को उन्होंने जम्मू एंड कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की नेता महबूबा मुफ्ती की रिहाई की मांग की है। राहुल गांधी ने ट्वीट कर कहा कि भारत का लोकतंत्र उस समय क्षतिग्रस्त हो गया। जब केंद्र सरकार ने गैरकानूनी रूप से राजनीतिक नेताओं को बंदी बनाया। यह सही समय है जब महबूबा मुफ्ती को रिहा किया जाए।' राहुल से पहले पूर्व केंद्रीय मंत्री पी चिदंबरम ने महबूबा मुफ्ती की नजरबंदी बढ़ाने का विरोध किया था। उन्होंने शनिवार को कहा कि सार्वजनिक सुरक्षा अधिनियम (पीएसए) के तहत मुफ्ती की नजरबंदी बढ़ाना कानून का ही उल्लंघन नहीं है बल्कि नागरिकों को मिले संवैधानिक अधिकारों पर भी हमला है। उन्होंने पूछा कि 61 साल की पूर्व मुख्यमंत्री सार्वजनिक सुरक्षा के लिए कैसे खतरा हो सकती हैं? वरिष्ठ कांग्रेस नेता ने ट्वीट कर कहा था कि पीएसए के तहत सुश्री महबूबा मुफ्ती की नजरबंदी का विस्तार कानून का दुरुपयोग है और नागरिकों के संवैधानिक अधिकारों पर हमला है। 61 वर्षीय पूर्व मुख्यमंत्री, 24 घंटे सुरक्षा गार्ड से संरक्षित व्यक्ति, सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा कैसे है?' चिदंबरम ने आगे कहा था कि उन्होंने उन शर्तों को जारी करने के प्रस्ताव को सही ढंग से खारिज कर दिया, जो कोई भी स्वाभिमानी राजनीतिक नेता मना कर देता। उनकी नजरबंदी के लिए दिए गए कारणों में से एक- उनकी पार्टी के झंडे का रंग है- जो हंसी का पात्र था। उन्हें अनुच्छेद 370 के निरस्तीकरण के खिलाफ क्यों नहीं बोलना चाहिए? क्या यह स्वतंत्र भाषण के अधिकार का हिस्सा नहीं है?' कोरोना महामारी के चलते चेन्नई में रविवार को देखने को मिल रही पूर्ण तालाबंदी पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा था कि मैं अनुच्छेद 370 को निरस्त करने को चुनौती देने वाले सुप्रीम कोर्ट में एक मामले में पेश वकील में से एक हूं। अगर मैं अनुच्छेद 370 के खिलाफ बोलूं- जैसा कि मुझे करना चाहिए- क्या यह सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा है? हमें सामूहिक रूप से अपनी आवाज बुलंद करनी चाहिए और महबूबा मुफ्ती को रिहा करें की मांग करनी चाहिए।

मध्य प्रदेश के पूर्व सीएम कमलनाथ करा रहे हैं 'हनुमान चालीसा' का पाठ, ये है वजह

भोपाल.एजेंसी। मध्यप्रदेश कांग्रेस के प्रमुख कमलनाथ अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के भूमि-पूजन समारोह की पूर्व संध्या यानी मंगलवार को भोपाल में अपने निवास पर 'हनुमान चालीसा' का पाठ कर रहे हैं। कांग्रेस प्रवक्ता भूपेंद्र गुप्ता ने कहा कि इस दौरान कोविड -19 के सभी प्रोटोकॉल का सख्ती से पालन किया जाएगा। गुप्ता ने बताया कि मंगलवार को कमलनाथ के निवास पर हनुमान चालीसा का पाठ किया जाएगा। वह हनुमानजी के आराध्य भक्त हैं। उन्होंने पार्टी कैडर और नेताओं से मंगलवार को अपने घरों में 'हनुमान चालीसा' का पाठ करने के लिए कहा है। शनिवार को कमलनाथ ने कहा कि हर भारतीय की सहमति से अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण किया जा रहा है। जब कांग्रेस प्रवक्ता से पूछा गया कि राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री द्वारा आयोजित कार्यक्रम के पीछे का कारण क्या है तो उन्होंने कहा कि मंगलवार एक शुभ दिन है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम को लेकर कोई अंदाज नहीं लगाना चाहिए। यह विशुद्ध रूप से एक आध्यात्मिक कार्यक्रम है। उन्होंने कहा कि राज्य में कांग्रेस सरकार गिरने के चलते कमलनाथ जी अपने निर्वाचन क्षेत्र छिंदवाड़ा में हर साल होने वाले भव्य वार्षिक धार्मिक आयोजन नहीं कर सके। उन्होंने कहा कि कुछ साल पहले जब कमलनाथ जी संसद थे तो उन्होंने छिंदवाड़ा जिले में भगवान हनुमान की 101 फीट ऊंची प्रतिमा स्थापित की थी।

मुख्यमंत्री ने चोपाल विधानसभा क्षेत्र में 188 करोड़ रुपये की विकासात्मक परियोजनाओं के लोकार्पण व शिलान्यास किए

शिमला (ब्यूरो)। जय राम ठाकुर ने 1.39 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित नागरिक अस्पताल चैपाल, 25 लाख रुपये के व्यय से निर्मित कुपवी तहसील में बागी हैलीपैड, 1.77 करोड़ रुपये की लागत निर्मित तिमावी-लच्छोग सड़क में मशरांहां खड्ड पर 30 मीटर पुल, नाबार्ड के अंतर्गत 3.15 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित लिहत-सराहन सड़क, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत 3.05 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित सरकाली-क्यारी शिलान सड़क, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत 8.91 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित कुपवी धोटाली- दैया सड़क, 6.25 करोड़ रुपये की लागत का 33 केवीए कुपवी उप केंद्र, 40 लाख रुपये की लागत से राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला नौरा-बौरा के भवन, 40 लाख रुपये की लागत से राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला खाफलाह के

भवन और 63.29 लाख रुपये की लागत से निर्मित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला बहरान समर्पित किए। मुख्यमंत्री ने तहसील ठियोग की ग्राम पंचायत बलघार के लिए 1.06 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित उठाउ सिंचाई योजना, ग्राम पंचायत मलाट की बस्तियों के लिए 95.66 लाख रुपये की लागत से उठाउ पेयजल आपूर्ति योजना, ग्राम पंचायत मझोली की बस्तियों के लिए 84.21 लाख रुपये की लागत की उठाउ पेयजल आपूर्ति योजना और क्यारी-2, दोची पुजारली-2, धार सवाला और चिलवार तथा ग्राम पंचायत पुजारली और रूलाहा की बस्तियों के लिए 86.54 लाख रुपये की लागत की उठाउ पेयजल आपूर्ति योजना का शुभारंभ किया।जय राम ठाकुर ने नागरिक अस्पताल नेरवा को 50 बिस्तरों से बढ़ाकर 75 बिस्तर, नागरिक अस्पताल चैपाल को 50 से बढ़ाकर 100 बिस्तर, पुलिस चैकी देहा को पुलिस थाना में स्तरोन्नत तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बलघार को 30 बिस्तर वाले सामुदायिक अस्पताल को स्तरोन्नत कर लोकार्पण किया।

मुख्यमंत्री ने एक करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होने वाली राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला जुबड़ के भवन, 9.15 करोड़ रुपये की लागत से प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत शिरगाह-शलन सड़क के स्तरोन्नयन और मैटलिंग-टारिंग कार्य, नाबार्ड के अंतर्गत 3.92 करोड़ रुपये की खिलाड़-मंदाह सड़क, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत 10.02 रुपये की लागत से कुपवी धोटली से देहा सड़क के स्तरोन्नयन और मैटलिंग-टारिंग कार्य, 1.39 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होने वाली राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला मड़ावग, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत 1.65 करोड़ रुपये की लागत से दोची-कनाह सड़क पर निर्मित होने वाला 40 मीटर पुल, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत 6.95 करोड़ रुपये की लागत से बिरखाई-रमदारा (टेलाड़) सड़क का निर्माण कार्य, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत 5.76 करोड़ रुपये की लागत से सरकाली-क्यारी शिलान सड़क का स्तरोन्नयन और मैटलिंग-टारिंग कार्य, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत 6.27 करोड़ रुपये की लागत से सराहन-जोरना सड़क के स्तरोन्नयन और मैटलिंग-टारिंग कार्य, प्रधानमंत्री सड़क योजना के अंतर्गत 13.37 करोड़ रुपये की लागत से सैंज तरहान कुपवी सड़क के स्तरोन्नयन और मैटलिंग-टारिंग कार्य प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत 6.19 करोड़ रुपये की लागत से धनाट से मनेवटी सड़क के निर्माण।

लॉकडाउन में भी छत्तीसगढ़ के स्कूली बच्चों को मिला मध्यान्ह भोजन का सूखा राशन

रायपुर.एजेंसी

कोरोना संक्रमण के संकट काल में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा मध्यान्ह भोजन योजना के तहत स्कूली बच्चों को घर-घर पहुंचाकर सूखा राशन देने के कदम की सराहना पूरे देश भर में की जा रही है। द इकोनॉमिक टाइम्स द्वारा मिड डे मील योजना के संबंध में देश के विभिन्न राज्यों के संबंध में विश्लेषणात्मक रिपोर्ट प्रकाशित की गई है जिसमें मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ राज्य सरकार की इस पहल की भूरी-भूरी प्रशंसा की गई है। अखबार द्वारा मिड डे डेफिसिट रिपोर्ट में देश के अन्य राज्यों में उठाएं गए कदमों का तुलनात्मक विवरण प्रकाशित किया गया है। इस रिपोर्ट में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा की गई पहल को पूरे देश के लिए अनुकरणीय बताया गया है। रिपोर्ट में इस बात का उल्लेख किया गया है कि मार्च माह में कोरोना संक्रमण की रोकथाम और बचाव के लिए जब देश में लॉकडाउन लागू किया जा रहा था,

राज्य सरकार ने स्कूली बच्चों को लॉकडाउन के 40 दिनों का सूखा राशन का वितरण किया। राज्य सरकार ने स्कूली बच्चों और उनके पालकों की कठिनाईयों पर संवेदनशीलता के साथ विचार करते हुए मध्यान्ह भोजन का सूखा राशन वितरण करने के लिए [illegible] से काम [illegible]। [illegible] लॉकडाउन [illegible] जा रहा था 22 मार्च को पूरे देश में [illegible] कर्फ्यू के एक दिन पहले ही छत्तीसगढ़ सरकार ने 21 मार्च को ही जिला कलेक्टरों और जिला शिक्षा अधिकारियों को स्कूली बच्चों को सूखा राशन वितरण करने के संबंध में दिशा निर्देश जारी किए। गांव गांव इसकी मुनादी करायी गयी। जबकि देश के अन्य राज्यों में सूखा राशन वितरण की प्रक्रिया काफी बाद में शुरू की गई। छत्तीसगढ़ में लॉकडाउन के पहले 40 दिनों के लिए स्कूली बच्चों को सूखा राशन दिया गया। बाद में राज्य सरकार द्वारा स्कूली बच्चों को 45 दिनों के लिए सूखा राशन वितरित किया गया। प्रदेश के 43,000 स्कूलों में 29 लाख बच्चे इस योजना से लाभान्वित हुए। वितरित किए गए सूखा राशन पैकेट में चावल, तेल, सोयाबीन, दालें, नमक और अचार थे। राज्य सरकार द्वारा स्थानीय स्तर पर स्कूली बच्चों और पालकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए यह व्यवस्था भी की गई। यदि माता-पिता पैकेट लेने के लिए स्कूल नहीं जा सकते हैं, तो स्वयं सहायता समूह और स्कूल स्टाफ के माध्यम से घर-घर जाकर सूखा राशन के पैकेटों की होम डिलीवरी की जाए। कोरोना संक्रमण काल में स्कूल बंद रहने की अवधि में बच्चों को मध्यान्ह भोजन अंतर्गत गरम पका भोजन नहीं दिया जा सकता। खाद्य सुरक्षा भत्ता के रूप में बच्चों को सूखा चावल एवं कुकिंग कास्ट की राशि [illegible] अन्य आवश्यक सामग्री दाल, तेल, सूखी सब्जी इत्यादि वितरित की गई।

opensearch

मुंबई के कंटेनमेंट जोन में गणपति का नहीं होगा सार्वजनिक विसर्जन

मुंबई.एजेंसी।
कोविड-19 महामारी के मद्देनजर महाराष्ट्र सरकार ने इस साल गणपति उत्सव सादगी से मनाने का आह्वान किया है। मुंबई कोरोना वायरस से बुरी तरह प्रभावित स्थानों में से एक हैं। जिसके कारण बीएमसी ने कंटेनमेंट जोन में गणपति का कोई भी समारोह सार्वजनिक रूप से न करने की अपील की है। 22 अगस्त से शुरू होने वाले गणेश उत्सव के लिए नागरिक निकाय द्वारा जारी द्वारा गाइड लाइन जारी की गई है। जिसके अनुसार अगर आपका घर कंटेनमेंट जोन में है जो आप घर के अंदर ही गणपति की मूर्ति स्थापित कर सकते हैं। आपको बता दें कि 1.13 लाख से अधिक कोरोना वायरस के मामले मुंबई में है। जहां पर लगभग 6,300 मौतों हो चुकी है। शहर में कम से कम 6,173 इमारतों को सील कर दिया गया है, जबकि नागरिक निकाय ने 616 रोकथाम क्षेत्रों की पहचान की है। जहां कोरोनोवायरस के मामले पाए गए हैं। आमतौर पर ऐसे क्षेत्र को 14 दिनों के लिए सील कर दिए जाते हैं। आमतौर पर उत्सव के अंतिम दिन मूर्तियों को विसर्जित करने के लिए मुंबई के समुद्र तट के लिए लाखों भक्तों की भीड़ होती है। बीएमसी ने कहा कि महामारी रोग अधिनियम, 1897, आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 और भारतीय दंड संहिता के तहत उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इसलिए सभी से अपील है कि त्योहार को सरल तरीके से मनाया जाए। आपको बता दें कि राज्य सरकार और नागरिक अधिकारियों ने पहले ही गणेश पंडालों के लिए चार फीट और घर में स्थापित होने वाले गणपति के दो फीट की मूर्तियों की ऊंचाई तय कर दी है।

जीवन मे बने आशावादी

चंडीगढ (ब्यूरो)। जीवन मे आशावादी बने आशावादी व्यक्ति से ही यह उम्मीद की जा सकती है कि वह मिट्टी से सोना पैदा कर सकता है। आशावादी कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाता, बल्कि वह दूसरे के बढ़े हुए हाथों को थामकर उन्हें नई जिंदगी देता है। जीवन का आनंद संघर्षो से लडकर जीने में ही है और मनुष्य आशावादी होकर ही संघर्ष कर सकता है। आशा ही उसे सफलता, सुख व आनंद सब कुछ दिलाती है। इसके विपरीत निराश व्यक्ति कोशिश करने से पहले ही अपने को हारा हुआ मान लेता है। निराशा से व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक क्षमता भी घटती जाती है। इस वजह से भी सफलता उससे दूर भागती जाती है। और जो व्यक्ति पूरी तरह निराश हो जाता है वह अपना जीवन ही समाप्त कर देता है। स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं कि मनुष्य के लिए निराशा से बढकर दूसरा कोई पाप नहीं है। हमें निराशा का विनाश करके आशा को अपना धर्म बनाना चाहिए। अपने

मनीषीसंतमुनिश्री विनयकुमारजी आलोक

जीवन-उद्देश्य को हासिल करने के लिए हमें सबसे पहले आशावाद का सहारा लेना चाहिए। ये शब्द

मनीषीसंतमुनिश्रीविनयकुमार जी आलोक ने कहे।

मनीषीश्रीसंत ने कहा- संसार का एक बोझ बनकर रहने से बेहतर है संसार को छोड़ देना। मानसिक क्षेत्र के ऊपर आध्यात्मिक क्षेत्र है। आध्यात्मिक जगत में केवल अपने मिशन के विषय में चिंतन करना ही पर्याप्त नहीं है, क्योंकि मिशन का उद्देश्य है बाहरी जगत में सेवा करना। वस्तु जगत में, बाह्य जगत में किसी का कोई भी मिशन क्यों न हो, मूल रूप से उसके मिशन का उद्देश्य है जगत के कल्याण को बढ़ा देना। किंतु गति जब भीतर की ओर होती है। अर्थात गति जब मन से आत्मा की ओर होती है। तब मिशन का कोई महत्व नहीं है। ऐसा इसलिए, क्योंकि तब हम अपने संपूर्ण अस्तित्व को परमपूर्णता में विसर्जित करने जा रहे हैं। मनुष्य इस दुनिया में आया है कुछ करने के लिए। अगर हम कर्म करना नहीं चाहेंगे तो हम दुनिया पर महज एक बोझ बनकर ही रह जाएंगे। तब हमारे लिए दुनिया में अधिक दिनों रहना उचित नहीं होगा। ऐसी स्थिति में दुनिया से जल्द से जल्द चले जाना अच्छा है। मैंने एक बार कहा था कि काम करते-करते मरो और मरते-मरते भी काम करते रहो। इसलिए इस बात को मन में हमेशा रखना चाहिए कि मैं इस संसार में अपने मिशन को पूरा करने के लिए ही जीवित हूं। इसी कारण से मैं खा रहा हूं, मैं पोशाक पहन रहा हूं, मैं सो रहा हूं। इसको छोडकर मेरे लिए सब व्यर्थ है। यदि किसी लक्ष्य के बिना, मिशन के बगैर, कोई जीवन जीता है तो उस अवस्था में कोई भी प्रयास मानसिक क्षेत्र में सफलता नहीं ला सकता। यदि हम काम करना नहीं चाहते हैं, यदि हम संसार की सेवा करना नहीं चाहते हैं तब हम संसार के लिए एक भार हो जाएंगे।

मनीषीश्रीसंत ने अंत मे फरमाया मनुष्य जीवन क्यों है? किस वास्ते है? मोक्ष प्राप्त करने के लिए और जगत के हित या कल्याण के लिए। आत्ममोक्षार्थ के लिए जो प्रयास नहीं करते हैं, साधना नहीं करते हैं, उनसे जगत का कल्याण नहीं होता है, उनसे दुनिया का कल्याण हो नहीं सकता है। यदि आप अपने मिशन का कार्य करने के लिए शपथ लेते हैं तो याद रखें कि शपथ आपकी मुक्ति की आकांक्षा को संभव नहीं बनाएगी। यद्यपि उस संकल्प के द्वारा आप जगत की सेवा कर सकते हैं। इसलिए आध्यात्मिक क्षेत्र में आपकी प्रगति केवल आपके मिशन पर निर्भर नहीं है।

भारत में पहले लॉकडाउन के बाद कोरोना के मामलों में मृत्यु दर सबसे कम 2.15 प्रतिशत

नई दिल्ली.एजेंसी
भारत वैश्विक स्तर पर कोविड-19 की सबसे कम मृत्यु दर दर्ज करने और उसे बनाए रखने में लगातार सफल रहा है। देश में कोरोना के मामलों में मृत्यु दर 2.15 प्रतिशत है और यह पहले लॉकडाउन की शुरुआत के बाद से सबसे कम है। जून के मध्य में यह लगभग 3.33 प्रतिशत थी जिसमें लगातार गिरावट आ रही है। यह केंद्र के साथ-साथ राज्य/केंद्र शासित प्रदेश सरकारों की 'जांच, खोज, उपचार' के लिए समन्वित, पूर्व-निर्धारित, वर्गीकृत और विकसित रणनीति और प्रयासों को दर्शाता है। अस्पताल के बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने के साथ-साथ त्वरित परीक्षण ने कोविड-19 के रोगियों की शीघ्र पहचान और गंभीर रोगियों की पहचान को सक्षम बनाया है जिससे मृत्यु की संख्या में कमी आई है। सीएफआर की दर को कम रखने के साथ-साथ, कंटेनमेंट रणनीति के सफल कार्यान्वयन, त्वरित परीक्षण और व्यापक देखभाल दृष्टिकोण के आधार पर मानकीकृत नैदानिक प्रबंधन प्रोटोकॉल के परिणामस्वरूप, ठीक होने वालों की संख्या 30,000/दिन के स्तर पर लगातार बनी हुई है। अब ठीक हुए लोगों की कुल संख्या करीब 11 लाख हो गई है। पिछले 24 घंटों में 36,569 रोगियों को अस्पताल से छुट्टी दिए जाने के साथ ही, ठीक हुए लोगों की संख्या 10,94,374 तक पहुंच गई है।

नई शिक्षा नीति में मध्याह्न भोजन के साथ स्कूली बच्चों को नाश्ते के प्रावधान का प्रस्ताव

नई दिल्ली.एजेंसी।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मध्याह्न भोजन के साथ सरकारी या सहायता प्राप्त स्कूलों में बच्चों को नाश्ता मुहैया कराने का प्रावधान रखने का भी प्रस्ताव है। पिछले दिनों केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा मंजूर की गई इस शिक्षा नीति में कहा गया है कि सुबह के समय पोषक नाश्ता मिलना ज्ञान-संबंधी असामान्य मेहनत वाले विषयों की पढ़ाई में लाभकर हो सकता है। इसी के मद्देनजर नई शिक्षा नीति में प्रस्ताव किया गया है कि मध्याह्न भोजन के दायरे का विस्तार कर उसमें नाश्ते का प्रावधान जोड़ा जाए। शिक्षा नीति में कहा गया, ''जब बच्चे कुपोषित या अस्वस्थ होते हैं तो वे बेहतर रूप से सीखने में असमर्थ हो जाते हैं। इसलिए, बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य (मानसिक स्वास्थ्य सहित)

पर ध्यान दिया जाएगा। पोषक भोजन और अच्छी तरह से प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ताओं, काउंसलर, और स्कूली शिक्षा प्रणाली में समुदाय की भागीदारी के साथ-साथ शिक्षा प्रणाली के अलावा विभिन्न सतत उपायों के माध्यम से कार्य किया जाएगा।'' इसमें कहा गया, ''शोध बताते हैं कि सुबह के समय पोषक नाश्ता ज्ञान-संबंधी असामान्य मेहनत वाले विषयों की पढ़ाई में लाभकारी हो सकता है।

इसलिए बच्चों को मध्याह्न भोजन के अतिरिक्त साधारण लेकिन स्फूर्तिदायक नाश्ता देकर सुबह के समय का लाभ उठाया जा सकता है।'' जिन स्थानों पर गरम भोजन संभव नहीं है, उन स्थानों पर साधारण लेकिन पोषक भोजन मसलन मूंगफली या चना गुड़ और स्थानीय फलों के साथ उपलब्ध कराया जा सकता है। नई शिक्षा नीति में कहा गया है, ''सभी स्कूली छात्रों की नियमित स्वास्थ्य जांच कराई जाए और उनका शत प्रतिशत टीकाकरण हो। इसकी निगरानी के लिए स्वास्थ्य कार्ड भी जारी किए जाएंगे।'' नई नीति में प्रस्ताव किया गया है कि पांच साल की उम्र के पहले सभी बच्चों को ''प्रारंभिक कक्षा'' या ''बालवाटिका'' को भेजा जाए। इसमें कहा गया है, ''प्रारंभिक कक्षा में पढ़ाई मुख्य रूप से खेल आधारित शिक्षा पर आधारित होगी और इसके केंद्र में ज्ञान-संबंधी, भावात्मक और मनोप्रेरणा क्षमताओं के विकास को रखा गया है। मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का विस्तार प्राथमिक स्कूलों की प्राक्-प्रवेश कक्षाओं में भी किया जाएगा।'' आंगनबाड़ी में उपलब्ध स्वास्थ्य जांच और बच्चों के विकास की निगरानी संबंधी व्यवस्था को प्राक्-प्रवेश कक्षाओं में उपलब्ध कराया जाएगा। मिड डे मील के नाम से प्रसिद्ध स्कूलों में ''मध्याह्न भोजन'' का राष्ट्रीय कार्यक्रम केंद्रीय प्रायोजित योजना है जिसके दायरे में सरकारी या सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों और समग्र शिक्षा के अधीन मदरसा सहित विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के कक्षा एक से आठ तक के छात्र आते हैं। केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने इस सप्ताह की शुरुआत में नई शिक्षा नीति-2020 की घोषणा कर देश की 34 साल पुरानी, 1986 में बनी शिक्षा नीति को बदल दिया। नई नीति का लक्ष्य भारत के स्कूलों और उच्च शिक्षा प्रणाली में इस तरह के सुधार करना है कि देश दुनिया में ज्ञान की 'सुपरपॉवर' कहलाए।

बिहार में राबड़ी आवास के 13 कर्मी मिले कोरोना संक्रमित

पटना.एजेंसी।
बिहार में कोरोना संक्रमण की रफ्तार के बीच इसकी चपेट में राजनेता भी आने लगे हैं। रांची में चारा घाटाला के मामलों सजा काट रहे राष्ट्रीय जनता दल सुपीमो लालू प्रसाद यादव सहित पटना में उनके परिवार पर भी इसका खतरा मंडराने लगा है। पटना में लालू प्रसाद यादव की पत्नी राबड़ी देवी के नाम से आवंटित जिस आवास में उनका पूरा परिवार रहता है, उसके 13 कर्मचारी कोरोना संक्रमित पाए गए हैं। इस कारण राबड़ी देवी के साथ उनके दोनों बेटों नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव तथा पूर्व स्वास्थ्य मंत्री तेज प्रताप यादव पर खतरा बढ़ गया है। उधर, चारा घोटाला में सजा के दौरान बीमार लालू रिम्स (अस्पताल) में जहां इलाज करा रहे हैं, वहां पास में ही कोरोना वार्ड है। बीते दिनों लालू की सुरक्षा में तैनात जिस सुरक्षा गार्ड की हत्या हो गई थी उसकी कोरोना जांच

रिपोर्ट भी पॉजिटिव मिली है। बिहार में बीते 24 घंटे के अंदर रिकार्ड 3521 कोरोना पॉजिटिव मरीज मिले हैं। इनमें पटना के 442 संक्रमितों में लालू प्रसाद यादव की पत्नी के नाम से आवंटित पटना के सरकारी आवास (10, सर्कुलर रोड, पटना) में कार्यरत 13 कर्मचारी भी शामिल हैं। इसी आवास में राबड़ी देवी के साथ तेजस्वी यादव और तेज प्रताप यादव भी रहते हैं। यहां के कर्मचारियों के कोरोना पॉजिटिव मिलने से राबड़ी, तेजस्वर व तेज प्रताप के साथ वहां आने-जाने वाले लालू परिवार के अन्य सदस्यों को भी कोरोना का खतरा बढ़ गया है। उधर, खुद लालू प्रसाद यादव पर भी कोरोना का खतरा होने की बात कही जाती रही है। चारा घोटाला के सिलसिले में रांची के होटवार जेल में सजा काट रहे लालू इन दिनों बीमारी के कारण रांची के रिम्स (अस्पताल) के पेइंग वार्ड में भर्ती हैं। वहां पास में ही कोरोना वार्ड होने के किरण उन्हें कोरोना संक्रमण का खतरा होने की आशंका व्यक्त की जाती रही है।

दिल्ली में छिनैती और लूट के कई मामलों में शामिल दो आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली.एजेंसी। दिल्ली में छिनैती और लूट की कई घटनाओं में शामिल दो लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने हथियार मुहैया कराने वाले इनके सहयोगी को भी पकड़ा है। पुलिस ने मंगलवार को बताया कि 27 वर्षीय सुनील लूट और छिनैती के 47 मामलों में शामिल था, जबकि 22 वर्षीय अमित 15 आपराधिक मामलों में शामिल रहा है। वहीं 22 वर्षीय तरुण को इन दोनों को हथियार मुहैया कराने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने बताया कि अमित को चेहरा पहचानने वाली तकनीक की मदद से गिरफ्तार किया गया। इन दोनों के पास से छीने गए तीन फोन और दो पिस्तौल जब्त की गई है। पुलिस के अनुसार कांस्टेबल मुकेश 27 जुलाई को उत्तरपश्चिमी दिल्ली के पीतमपुरा में गश्त कर रहे था और इसी दौरान उन्होंने बाइक सवार दो लोगों को रोका, क्योंकि इन दोनों ने मास्क नहीं पहन रखा था। कोविड-19 महामारी की वजह से मास्क पहनना अनिवार्य है। उन्होंने बताया कि पूछताछ के दौरान इन दोनों ने संतोषजनक जवाब नहीं दिया और इनमें से एक ने कांस्टेबल पर पिस्तौल तान दी और फिर पुलिसकर्मी की मोटरसाइकिल का शीशा पिस्तौर की बट से तोड़ते हुए बाहरी रिंग रोड की तरफ फरार हो गए। पुलिस उपायुक्त (उत्तर पश्चिम) विजयंता आर्या ने कहा कि कांस्टेबल द्वारा ली गई तस्वीरों और 1500 सीसीटीवी की तस्वीरों को अपराध रिकॉर्ड अधिकारी के पास भेजा गया, जहां चेहरा पहचानने वाली तकनीक के जरिए अमित की पहचान की गई।

चोरी के आरोप में पकड़े गए नाबालिग ने पुलिस के सामने कबूला-मां और नानी कराती हैं अपराध

नई दिल्ली। दक्षिण दिल्ली के आंबेडकर नगर में खड़ी एक कार से कथित तौर पर 1.2 लाख रुपयों से भरे बैग को चुराते हुए पकड़े गए 12 वर्षीय बालक ने खुलासा किया कि मां और नानी उससे चोरी कराती हैं। पुलिस ने मंगलवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार सोमवार को किशोर की नानी को गिरफ्तार कर लिया गया जबकि उसकी मां अभी फरार है। उन्होंने बताया कि 27 जुलाई को नाबालिग ने एक बैग चारी किया था, जिसमें 1, 20, 000 रुपये थे। दिल्ली पुलिस आयुक्त (दक्षिण) अतुल कुमार ठाकुर ने कहा, ''जांच के दौरान, सीसीटीवी फुटेज खंगाली गई। सोमवार को नाबालिग की पहचान हुई और पुलिस उसे पकड़कर पूछताछ की। पुलिस ने उसके पास से पांच हजार रुपये भी बरामद किए।'' पुलिस अधिकारी ने बताया कि पूछताछ के दौरान नाबालिग ने बताया कि अपनी मां के कहने पर उसने एक गाड़ी में से वह बैग चुराया था। उसने कहा कि मां और नानी उससे चोरी कराती हैं। उन्होंने बताया कि उसकी नानी को गिरफ्तार कर लिया गया है और उनके घर से 1, 05, 000 रुपये के साथ चोरी किया वह बैग भी बरामद हो गया।पुलिस ने बताया कि उनके पास से कुल 1, 10, 000 रुपये बरामद हो गए हैं। नाबालिग की मां की तलाश अभी जारी है।

जेएनयू को सरकार ने दिए 455 करोड़ रुपये

नई दिल्ली.एजेंसी। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के नए एकेडमिक भवन और हॉस्टल के लिए 455 करोड़ रुपए आवंटित किए हैं। मंत्रालय ने उच्च शिक्षा फंडिंग एजेंसी के जरिए यह फंड आवंटित किया है। इस फंड के जरिए विश्वविद्यालय में शोध केंद्र और समन्वित उद्यम संसाधन योजना प्रणाली भी विकसित की जाएगी। गौरतलब है कि पिछले दिनों जेएनयू में कई नए विशेष केंद्र और स्कूल खोले गए हैं। यह देखते हुए परिसर में छात्रों के लिए हॉस्टल आदि की बेहद जरूरत थी। आज यहां जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार जेएनयू में अटल इनक्यूबेशन सेंटर भी खुला है और इसके लिए तीन कंपनियां भी काम कर रही हैं। इस परियोजना में 100 कंपनियो का लक्ष्य रखा गया है। जेएनयू के कुलपति एम जगदीश कुमार ने कहा है कि हेफा से मिले फंड का इस्तेमाल अटल बिहारी बाजपेई स्कूल ऑफ मैनेजमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप के छात्रों और शोधार्थियों लिए होस्टल बनाने, स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग के लिए एकेडमिक भवन इन्क्यूबेशन सेंटर और विकसित पशु अनुसंधान केंद्र के लिए किया जाएगा जल्द ही भवन निर्माण कार्य शुरू होगा। जेएनयू में हर साल करीब 1, 30, 000 छात्र दाखिला के लिए परीक्षा देते हैं जबकि 2000 छात्रों का ही दाखिला हो पाता है। यह देखते हुए विश्वविद्यालय ने एक ई लर्निंग विशेष केंद्र भी स्थापित किया है जिसके माध्यम से उन छात्रों को ऑनलाइन डिग्री दी जायेगी जिनका दाखिला नहीं हो सका। इन्हें जेएनयू के शिक्षक पढ़ाएंगे।

कोरोना के बावजूद छात्रों में विदेश में पढ़ने का क्रेज बरकरार

नई दिल्ली। भले ही कोरोना का खौफदुनियाभर में फैला है, इसके बावजूद भारतीय छात्रों में विदेश में शिक्षा हासिल करने का क्रेज अभी भी कायम है। इस तथ्य का खुलासा 'जेननेक्सट मेंटर्स' की ओर से आयोजित तीन दिवसीय 'वर्चुअल एडु फेस्ट' में हुआ है। इस फेस्ट में करीब 1500 छात्रों ने भाग लिया, जिसमें करीब 60 फीसदी छात्रों ने विदेश से शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा जताई। जेननेक्सट मेंटर्स की डायरेक्टर ज्योति अग्रवाल ने बताया कि उनकी तरफसे एक से तीन अगस्त तक आयोजित 'वर्चुअल एडु फेस्ट' में 30 स्कूलों के करीब 1500 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। 12वीं पास कर चुके इन छात्रों में कोरोना का डर तो दिखाई दिया, लेकिन भविष्य और कैरियर की चिंता भी उनमें साफतौर पर देखने को मिला। फेस्ट में शामिल छात्रों में से जहां 40 प्रतिशत छात्रों ने भारतीय विश्वविद्यालयों में पढ़ने में रुचि दिखाई तो 60 प्रतिशत छात्रों ने विदेश के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में दिलचस्पी दिखाई।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने दीया, मास्क और सैनिटाइजर का किया वितरण

नई दिल्ली। श्री राम मंदिर भूमि पूजन के पूर्व दिवस पर कनॉट प्लेस के हनुमान मंदिर में आयोजित एक कार्यक्रम में आज दिल्ली भाजपा अध्यक्ष आदेश गुप्ता ने दीया, मास्क और सैनिटाइजर का वितरण किया और सभी से 5 अगस्त की संध्या को दीया जलाने की अपील की। कार्यक्रम का आयोजन मीडिया पैनेलिस्ट शिवम छावड़ा ने किया। इस अवसर पर दिल्ली भाजपा युवा मोर्चा अध्यक्ष सुनील यादव, जिलाध्यक्ष अनिल शर्मा सहित जिले व मंडल के पदाधिकारी उपस्थित थे। आदेश गुप्ता ने बताया कि दीया वितरण अभियान के तहत दिल्ली भाजपा के सभी कार्यकर्ता अपने-अपने बूथों से कुल 11 लाख दीयों का वितरण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली के लोग श्री राम मंदिर भूमि पूजन को लेकर बहुत ही उत्साहित है क्योंकि 500 वर्षों के संघर्ष के बाद अंततः वह दिन आ गया है जब श्री राम मंदिर का भूमि पूजन होने के बाद मंदिर निर्माण कार्य शुरू होगा। कल जब माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कर कमलों से भूमि पूजन होगा उस समय पूरी दिल्ली भी उस पवित्र और ऐतिहासिक क्षण की सहभागी और साक्षी बनेगी। श्री गुप्ता ने कहा कि इससे ज्यादा हर्ष की बात नहीं हो सकती जब सभी धर्मों ने शांति और सौहार्दपूर्ण तरीके से श्री राम मंदिर निर्माण के फैसले को अपनी सहमति दी है। 14 वर्ष के वनवास के बाद जब प्रभु श्री राम अयोध्या लौटे थे तो दीपोत्सव मनाया गया था उसी तरह कल भी 500 वर्षों के बाद श्री राम मंदिर भूमि पूजन के अवसर पर पूरा देश दीपों की रोशनी से जगमग करेगा।

81 लोगों को करूणामूलक आधार पर नियुक्ति पत्र प्रदान किए

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के महापौर निर्मल जैन, स्थायी समिति अध्यक्ष, सत्यपाल सिंह और नेता सदन, प्रवेश शर्मा ने निगम मुख्यालय में सफाई कर्मचारियों के 81 मृतकाश्रितों को करूणामूलक आधार पर नियुक्ति पत्र प्रदान किए। मृतकाश्रितों को नियुक्ति के सभी मामले शाहदरा (दक्षिण) क्षेत्र से संबंधित हैं। इस अवसर पर वरिष्ठ निगम अधिकारी, सफाई कर्मचारी यूनियन के प्रतिनिधि और मृतक सफाई कर्मचारियों के परिजन भी शामिल रहे। महापौर निर्मल जैन ने कहा कि पूर्वी दिल्ली नगर निगम विषम परिस्थितियों में भी अपने सफाई कर्मचारियों के साथ खड़ा हुआ है। श्री जैन ने कहा कि दिल्ली सरकार के असहयोगपूर्ण रवैये के बावजूद निगम द्वारा सफाई कर्मचारियों को समय से वेतन भुगतान की पूरी कोशिश की जा रही है।

कोरोना संकट के दौरान किए गए सेवा कार्यों के लिए सम्मानित

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष आदेश गुप्ता व सांसद श्री रमेश बिधूड़ी ने तुगलकाबाद विधानसभा क्षेत्र के एनजीओ, आरडब्लूए तथा धार्मिक संगठनों के पदाधिकारियों को किया सम्मानित

नई दिल्ली (ओपन सर्च)

कोरोना वॉरियर्स के रूप में एनजीओ, आरडब्लूए तथा धार्मिक संगठनों ने निस्वार्थ रूप से सेवा कार्योंमें अपना उत्कृष्ट योगदान दिया है वह अविस्मरणीय और अनुकरणीय है

दिल्ली के मुख्यमंत्री ने दिल्ली के लोगों को कोरोना संकट कि इस लड़ाई के बीच में ही छोड़ दिया था

दिल्ली के लोगों में भय व्याप्त था लेकिन माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में गृह मंत्री अमित शाह जी ने दिल्ली की स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार कर लोगों को सुरक्षित करने का बीड़ा उठाया

परिणाम स्वरूप आज दिल्ली में कोरोना कि एक्टिव मामले 10,000 से भी कम है और रिकवरी रेट में भी रिकॉर्ड वृद्धि आई है

लोधी एस्टेट में आयोजित एक कार्यक्रम में दिल्ली भाजपा अध्यक्ष श्री आदेश गुप्ता व सांसद श्री रमेश बिधूड़ी ने तुगलकाबाद विधानसभा क्षेत्र के एनजीओ, आरडब्लूए तथा धार्मिक संगठनों के पदाधिकारियों को कोरोना संकट के दौरान किए गए सेवा कार्यों के लिए सम्मानित किया। कार्यक्रम का आयोजन निगम पार्षद श्री दीपक जैन ने किया था। इस अवसर पर प्रदेश मंत्री श्री विक्रम बिधूड़ी सहित एनजीओ, आरडब्लूए तथा धार्मिक संगठनों के पदाधिकारियों उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री आदेश गुप्ता ने कहा कि कोरोना वॉरियर्स के रूप में एनजीओ, आरडब्लूए तथा धार्मिक संगठनों ने निस्वार्थ रूप से सेवा कार्यों में अपना उत्कृष्ट योगदान दिया है वह अविस्मरणीय और अनुकरणीय है। उन्होंने कहा कि वैश्विक महामारी कोरोना के कारण उत्पन्न हुए इस संकट के दौरान भाजपा कार्यकर्ता और सामाजिक संगठनों ने दिल्ली के गरीब जरूरतमंद लोगों की सेवा कर एक अनुपम उदाहरण पेश किया है। संकट के समय लोग घरों से नहीं निकल रहे थे लेकिन सामाजिक संगठनों और कार्यकर्ताओं ने उन तक हर संभव मदद पहुंचाई और जरूरत के सभी सामान मुहैया करवाए। सेवा ही संगठन है के मंत्र को भाजपा कार्यकर्ताओं ने चरितार्थ किया और इस संकट से उबरने में सभी की मदद की। कई चुनौतियां आई लेकिन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमें उन चुनौतियों को अवसर में बदलने का रास्ता मिला। श्री गुप्ता ने कहा कि मानव सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं हो सकता है। लेकिन दिल्ली के मुख्यमंत्री ने दिल्ली के लोगों को कोरोना संकट कि इस लड़ाई के बीच में ही छोड़ दिया था। दिल्ली सरकार और उनके मंत्री के बयानों के कारण दिल्ली के लोगों में भय व्याप्त था लेकिन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने दिल्ली की स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार कर लोगों को सुरक्षित करने का बीड़ा उठाया। परिणाम स्वरूप आज दिल्ली में कोरोना कि एक्टिव मामले 10,000 से भी कम है और रिकवरी रेट में भी रिकॉर्ड वृद्धि आई है। श्री रमेश बिधूड़ी ने कहा कि समाज से जुड़े मुद्दों को लेकर सामाजिक एवं धार्मिक संगठन निरंतर काम करते रहते हैं और कोरोना संकट के समय इन संगठनों ने समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं सेवा के इस महायज्ञ के सहभागी बने। उन्होंने कहा राजनीतिक व्यक्तियों को लेकर लोगों के यह विचार होते कि वह सिर्फ राजनीति करते हैं लेकिन भारतीय जनता पार्टी एक ऐसी पार्टी जिस से जुड़े लोग सेवा कार्यों के लिए जाने जाते हैं। इसका उदाहरण पूरी दिल्ली ने भी कोरोना संकट के समय में देखा और सराहा भी।

आखिरी चरण के फेफड़ों के कैंसर से ग्रस्त मरीज को मिला नया जीवन

नई दिल्ली.एजेंसी।
विश्वस्तर पर सबसे अधिक मृत्युदर के साथ, फेफड़ों का कैंसर सबसे घातक कैंसरों में से एक माना जाता है। जागरुकता में कमी के कारण लोग इसके लक्षणों को समझने में चूक जाते हैं (टीबी समझ बैठते हैं) जिसके कारण बीमारी की पहचान देर से होती है। परिणामस्वरूप अधिकतर मरीजों में कैंसर गंभीर होता जाता है जिससे उनकी जान का खतरा बनता है। मैक्स अस्पताल ने आज 76 वर्षीय मरीज, त्रिपाठी के टेस्टीमोनियल को साझा किया, जिन्होंने फेफड़ों के कैंसर के खिलाफ अपनी लड़ाई जीत ली है और अब एक स्वस्थ जीवन जी रही हैं। फेफड़ों का कैंसर या फेफड़ों का कार्सिनोमा, कैंसर के कारण होने वाली लगभग 20: मौतों के लिए जिम्मेदार माना जाता है। हालांकि, यह मामला खुद इस बात की पुष्टि करता है कि ऑन्कोलॉजी के क्षेत्र में प्रगति के साथ चौथे चरण के फेफड़ों के कैंसर का भी सफल इलाज संभव है। इसकी मदद से न सिर्फ मरीज को एक नया जीवन मिलता है बल्कि उनके जीवन की गुणवत्ता भी बेहतर हो जाती है।

इसलिए इस घातक बीमारी के मामलों में कमी लाने के लिए अधिक से अधिक लोगों को जागरुक करना आवश्यक है। 2009 में जब त्रिपाठी 65 वर्ष की थीं, तब उनके दाएं फेफड़े में चौथे चरण के मेटास्टेटिक कैंसर की पहचान हुई थी। क्रोनिक किडनी डिजीज (सीकेडी) के इतिहास के साथ उनकी सर्वाइकल लिंफनॉड्स में सूजन पाई गई। परीक्षणों से पता चला कि एडवांस चरण के साथ उनका कैंसर शरीर के अन्य अंगो में फैल चुका था। वहीं पेट-सीटी स्कैन की मदद से मरीज के फेफड़े के ऊपरी दाएं हिस्से में घातक एडेनोमाकार्सिनोमा की पुष्टि हुई। पटपड़गंज स्थित मैक्स सुपर स्पेशलिटी अस्पताल की निदेशक मीनू वालिया ने बाताया कि, 'मूल्यांकन के बाद ऑन्कोलॉजिस्ट की हमारी टीम ने मेडिकेशन के 6 साइकल के साथ मरीज को कीमोथेरेपी पर रखने का फैसला किया। इसकी मदद से उनकी स्थिति स्थिर हो गई और हमने उन्हें बार-बार अस्पताल आने की सलाह दी। 6 साल बाद उनमें कैंसर की कोशिकाएं हल्की बढ़ी हुई पाई गईं। 2019 में स्कैन करने पर पता चला कि कैंसर पूरे फेफड़े में फैल चुका है। इसके बाद हमने ओरल और टार्गेटेड थेरेपी के साथ उनका सफलतापूर्वक इलाज किया। श्रीमती त्रिपाठी की हालत में अब सुधार है और वह एक स्वस्थ जीवन जी रही हैं।' इलाज के बाद से मरीज एक सुखद और बेहतर जीवन जी रही है। चूंकि, बीमारी की शुरुआती पहचान के साथ मरीज की जान बचने की संभावना ज्यादा होती है इसलिए लोगों के बीच इसके बारे में जागरुकता बढ़ाना आवश्यक है। समय पर निदान और रुटीन चेकअप कैंसर की शुरुआती पहचान और उचित इलाज की कुंजी हैं। डॉक्टर मीनू वालिया ने आगे बताया कि, 'चौथे चरण के कैंसर के बाद भी श्रीमती त्रिपाठी पूरे 10 सालों तक कैंसर के खिलाफ अपनी जंग लड़ती रहीं।

दिल्ली हिंसा : दिल्ली पुलिस ने की अपूर्वानंद से पूछताछ

नई दिल्ली.एजेंसी।

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने उत्तर पूर्वी दिल्ली में फरवरी में हुई हिंसा के मामले में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अपूर्वानंद से पूछताछ की है। प्रोफेसर अपूर्वानंद ने आज एक बयान जारी कर कहा कि स्पेशल ने कल उनसे पांच घंटे तक पूछताछ की और उसके बाद जांच के नाम पर उनके मोबाइल फोन को जब्त कर लिया गया। उन्होंने कहा कि नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ आंदोलनकारियों का समर्थन करने वालों को हिंसा का स्रोत बताना बहुत चिंताजनक है।

उन्होंने कहा कि पुलिस अधिकारियों के साथ जांच में सहयोग से यह उम्मीद है कि दिल्ली पुलिस एक पूर्ण, निष्पक्ष जांच करेगी। उन्होंने मांग की है कि पुलिस सही तरीके से जांच करे और किसी बेगुनाह को न फंसाया जाए। पुलिस ने हाल में ही जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र उमर खालिद से भी पूछताछ कर उसका मोबाइल जब्त किया था। इससे पहले स्पेशल सेल ने एफआईआर 59/20 के तहत जामिया के छात्र मीरान हैदर, सफूरा जरगर, पूर्व छात्र शिफाउर्रहमान खान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की दो छात्रा देवांगना कलिता, नताशा नरवाल को गिरफ्तार किया था जिनमें से सफूरा को दिल्ली उच्च न्यायालय ने मानवीय आधार पर जमानत दी है।

गौरतलब है कि नागरिकता संशोधन कानून के समर्थकों और इसका विरोध करने वालों के बीच उत्तर पूर्वी दिल्ली में 23 से 26 फरवरी के बीच हिंसा हुई थीं, जिसमें 50 से अधिक लोग मारे गए थे और करीब 200 लोग घायल हो गए थे।

कोरोना योद्धा सफाई कर्मचारी के परिजनों को 10 लाख रूपए का चौक सौंपा

महापौर श्री जैन ने कहा कि पूर्वी दिल्ली नगर निगम के कर्मचारी, विशेषकर सफाई कर्मचारी कोरोना महामारी के दौरान भी निरंतरता व समर्पण के साथ अपने कार्य में लगे हुए हैं

नई दिल्ली.एजेंसी।
पूर्वी दिल्ली के महापौर निर्मल जैन ने निगम मुख्यालय में कोरोना योद्धा सफाई कर्मचारी मनोज कुमार के परिवार को पूर्वी दिल्ली नगर निगम की ओर से 10 लाख रूपए की सहायता राशि प्रदान की। पूर्वी दिल्ली नगर निगम के शाहदरा (उत्तरी) क्षेत्र में सफाई कर्मचारी के तौर पर कार्यरत मनोज कुमार की कोविड-19 से कार्य करते हुए मृत्यु हो गई थी। महापौर, निर्मल जैन ने मनोज कुमार की पत्नी श्रीमती पूजा को सफाई कर्मचारी संगठनों के प्रतिनिधियों की मौजूदगी में आर्थिक सहायता का चौक सौंपा। महापौर श्री जैन ने कहा कि पूर्वी दिल्ली नगर निगम के कर्मचारी, विशेषकर सफाई कर्मचारी कोरोना महामारी के दौरान भी निरंतरता व समर्पण के साथ अपने कार्य में लगे हुए हैं और पूर्वी दिल्ली की जनता की सेवा कर रहे हैं। श्री जैन ने ऐसे ही एक कोरोना योद्धा, मनोज कुमार की मृत्यु पर निगम परिवार की ओर से शोक प्रकट किया और ईश्वर से दिवंगत के परिवार को मनोबल प्रदान करने की प्रार्थना की। श्री जैन ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि पूर्वी दिल्ली नगर निगम द्वारा कोरोना योद्धाओं के परिजनों को 10 लाख रूपए की आर्थिक मदद प्रदान की जा रही है। दिल्ली सरकार को भी अपनी घोषणा के मुताबिक, सभी मृतक कोरोना योद्धाओं के परिजनों एक करोड़ रूपए की आर्थिक मदद तत्काल प्रदान करनी चाहिए ताकि कोराना योद्धाओं को सही मायनों में श्रद्धांजलि अर्पित की जा सके। श्री जैन ने इस संबंध में दिल्ली के मुख्यमंत्री, अरविंद केजरीवाल को एक पत्र भी लिखा है।

राममंदिर भूमिपूजन हेतु श्रीराजमाता जी मंदिर में यज्ञ अनुष्ठान

नई दिल्ली (ओपन सर्च)

रामजन्मभूमि पर मंदिर का निर्माण हिंदुस्तान के 130करोड़ नागरिकों हिन्दू, राष्ट्रवादी मुसलमानों व सभी धर्मों व सम्प्रदाय के लिए गौरव की बात है क्योंकि राम जी का चरित्र केवल हिंदुओ के लिए नहीं बल्कि पूरे मानवता के लिए प्रेरणा स्रोत हैं यह विचार शाहदरा गोरखपार्क स्थित श्रीराजमाता झंडेवाला मंदिर में स्वामी श्री राजेश्वरानंद जी महाराज ने अयोध्या में रामजन्मभूमि पर राममंदिर तीर्थ के भूमिपूजन सन्दर्भ में तीन दिवसीय अनुष्ठान के शुभारंभ करते हुए सन्देश में कहे। संस्थान के सहप्रबन्धक राम वोहरा ने बताया कि अयोध्या में राममंदिर निर्माण से पहले भूमिपूजन सन्दर्भ में मंदिर के आस पास पूरे परिसर को झंडो, तोरणद्वार व झालरों से सजाया गया। तीन दिवसीय राममंदिर अनुष्ठान हेतु चल रहे रामचरित मानस के अखण्ड पाठ सम्पन्न हुआ। राम दरबार सजाकर स्वामी श्री राजेश्वरानंद जी महाराज ने सर्वकल्याण हेतु अरदास करते हुए वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ ज्योत प्रचंड की। कोरोना संकट के मद्देनजर भक्तों को सामूहिक रूप से इकट्ठा होने की जगह क्रमानुसार उपस्थित होकर पाठ्य करने के निर्देश दिए गए। 24 घण्टे में निरन्तर रामचरित मानस का अखण्ड पाठ सम्पन्न होने पर रामायण जी की आरती उतारी गई व सात बार हनुमान चालीसा का पाठ किया गया।वैदिक मंत्रोच्चारण द्वारा हवन यज्ञ में भक्तों ने आहुतियां अर्पित की विगत भाजपा से उम्मीदवार व डॉक्टर सेल के उपाध्यक्ष डॉ अनिल गोयल व सुधीर त्रिवेदी द्वारा पूर्णाहुति में भाग लिया। इसके बाद कल तक के लिए अखण्ड रामनाम का जपयज्ञ शुरू हुआ जोकि कल भूमिपूजन के समय तक चलेगा। स्वामी राजेश्वरानंद जी महाराज ने कहा कि अगर कोरोना संकट व लॉक डाउन नियमो के वशीभूत होकर अयोध्या नहीं जा सकते तो क्या हुआ हम पूरे हिंदुस्तान को ही प्रकाशित करके अयोध्या के रूप में बदल देंगे। 5 अगस्त बुधवार भूमिपूजन को गोरखपार्क में ब्रह्मभोज व भण्डारे का आयोजन किया जाएगा।

राम मन्दिर निर्माण को ले देश भर में दिवाली से कई माह पूर्व दिवाली जैसा माहौल

नई दिल्ली.एजेंसी।
देशभर में राम मन्दिर निर्माण के लिए हो रहे भूमि पूजन को ले दिवाली जैसा माहौल है। मिटटी के दीयों के साथ-साथ मोमबत्तियों की बिक्री बढ़ गई हैं। जिसे देखो वही दीये और मोमबत्ती खरीदता दिख रहा है। अपने धर्म के प्रति ऐसी जागरूकता अनेक सालों बाद देखने को मिल रही है। खासकर हिन्दू महिलाओं में विशेष उत्साह देखने को मिल रहा है। महिलाएं एक दिन पूर्व से ही उत्सव मनाने की तैयारियां करती देखी गई। अनेक धार्मिक, सामाजिक संगठन इस ओर सक्रिय हैं। हर कोई अपने-अपने हिसाब से भगवान श्री राम की सेवा में जुटा है। भारतीय ब्राह्मण समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित जगदीश पर्षद शर्मा ने देशवासियों से अपील की है इस अवसर पर अपने घरों पर दीपक जलाकर खुशी मनाएं। उन्होंने कहा पांच सौ साल पुराना सपना साकार होने जा रहा है हम सभी को इस दिन को पुरे हर्षोल्लासके साथ मनाना चाहिए। जगदीश प्रसाद शर्मा ने कहा भगवान श्री राम न केवल माता पिता के आज्ञाकारी पुत्र थे बल्कि वे वचनबध और कर्तव्यपरायण एक आदर्श भाई भी थे। हम सबको उनके आदर्शो को अपने जीवन में अपनाकर चलना चाहिए। श्री दुर्गा मन्दिर सेवा समिति शाष्त्री पार्क की ओर से मन्दिर में अखंड रामायण पाठ और दीपमाला उत्सव आयोजित किया गया है तो श्री रामलीला कमेटी सर्कुलर रोड शाहदरा की ओर से लोगों से घरों व् मन्दिरों में घी के दिए जलाने का आह्वान किया गया है। समिति के अध्यक्ष एडवोकेट राजेन्द्र पाल नें बताया लोगों में मन्दिर निर्माण को ले बेहद उत्साह है।श्री राजमाता झंडेवाला मन्दिर गोरखपार्क में तीन दिन का अनुष्ठान चल रहा है। स्वामी राजेश्वरानन्द महाराज नें लोगों से दीपक व् मोमबत्ती जलाने का आह्वान किया है। उन्होंने भक्तो को दीये और मोमबत्ती वितरित भी किये हैं। श्री सत्य नारायण सेवा ट्रस्ट की ओरसे मीत नगर में संकलिप्त महायग का आयोजन किया जा रहा है कथाव्यास पंडित अशोक कुमार दीक्षित नें कहा हमारे जीवन में ये शुभ क्षण आया है हैं हम शोभाग्यशाली हैं हमें इसका भरपूर आनन्द लेना चाहिए। लोगों को घी के दीप जला आतिशबाजी छुड़ानि चाहिए। उन्होंने कहा इस का महत्व किसी भी सूरत में दिवाली से कम नहीं है।

जमकर बांटे गये शहर में राम नाम के दीये, लोग खुद आये आगे

नई दिल्ली.एजेंसी

अयोध्या में भगवान श्री राम के भव्य मन्दिर निर्माण की शुरवात के मौके पर राजधानी दिल्ली में अनेक संस्थाओं और निजी तौर पर बहुत से लोगों ने दीपोत्सव मनाने के लिए लोगों के बीच पहुंच दीप बांटें। ब्रजराज गौ सेवा ट्रस्ट द्वारा रामदीप पैकेटों का वितरण मोहन पार्क में किया गया। संस्था की ओर से विधायक जितेंद्र महाजन, पूर्व महापौर हर्ष मल्होत्रा, भजपा पूर्व जिलाध्यक्ष अनिल गुप्ता, भाजपा जिलाध्यक्ष कैलाश जैन, निगम पार्षद अजय शर्मा को भी रामदीप पैकेट दिए। भाजपा के शहरी केंद्र प्रमुख सन्दीप अग्रवाल, किसान मोर्चा अध्यक्ष ब्रह्मपाल ने प्रयास की सराहना करी। वही ट्रस्ट के अध्यक्ष संजय सिंह का कहना है कोरोना महामारी के कारण कुछ प्रतिबंधो के चलते हम सबका अयोध्या पहुचना सम्भव नही है हमारा ऐसा प्रयास है कि क्षेत्र को ही अयोध्या नगरी बनाया जा सके। इस मौके पर वही संस्था के सदस्य दिपांशु अग्रवाल का कहना है कि हर घर मने दीपोत्सव ऐसा है प्रयास। हम सब बहुत सौभाग्यशाली है जो भगवान श्री राम का मंदिर बनते देख रहे हैं हमारे पूर्वजों ने न जाने कितने लोगों ने कुर्बानिया दी होंगी।इस मौके पर राहुल बरुआ, अध्यक्ष संजय सहित कई गणमान्य लोग मौजूद थे। प्रीत विहार से निगम पार्षद बबिता खन्ना ने भी लोगों से अपने घरों तथा कार्यस्थल पर लोगों से दीपोत्सव संकल्प के तहत दीप जलाने का आह्वान किया।निगम पार्षद संतोष पाल ने भी लोगों से दीपोत्सव मनाने का आह्वान किया।

उन्होंने बताया लक्ष्मी नगर विजय चौक पर भंडारे का आयोजन भी किया जा रहा है।और वहीं पर भूमि पूजन के सीधे प्रसारण की व्यवस्था भी की जा रही है। मंडावली से निगम पार्षद शशी चानना ने मार्किट, मन्दिरों और लोगों के घरो पर पहुंच कर दीप वितरित किये और आग्रह किया कल दीपोत्सव के भागीदार बनें।

opensearch

ओपन सर्च

जो व्यक्ति अपने प्रति जागरूक नहीं रहता, प्रमाद में लगा रहता है, उसे पग-पग पर भय का सामना करना पड़ता है।

क्या होगी कोरोना की करवट?

अब कोरोना वायरस की समीक्षा करने का वक्त आ गया है। कई स्तरों पर आकलन किया जा रहा है कि संक्रमण घटने लगा है। कमोबेश भारत में मृत्यु-दर औसतन दो फीसदी हो गई है, जो बड़े देशों की तुलना में बेहतर है। संक्रमित मरीजों की संख्या 16 लाख को पार कर गई है, तो कोरोना वायरस से स्वस्थ होने वाले भी 10.20 लाख से अधिक हैं, लेकिन बुधवार तक 24 घंटे के दौरान पहली बार 52,000 से ज्यादा संक्रमित मरीज सामने आए हैं। बहरहाल लोगों के स्वस्थ होने के आधार पर ही रिकवरी रेट तय किया जाता है, जो अब 64 फीसदी से ज्यादा हो गया है।

विजय कुमार

बेशक बीते एक सप्ताह के दौरान 49-50 हजार नए मरीज सामने आते रहे हैं, लेकिन यह भी गौरतलब है कि अब 5.25 लाख से अधिक टेस्ट हररोज किए जा रहे हैं। संक्रमण का रोजाना का आंकड़ा, बेशक, अमरीका और ब्राजील से भी ज्यादा है, मौतें उन देशों की तुलना में ज्यादा हो रही हैं, लेकिन हम अपने देश की 138 करोड़ से ज्यादा की आबादी के परिप्रेक्ष्य में ही आकलन करेंगे। भारत में संक्रमण की औसत दर आठ फीसदी है। दिल्ली जैसे राज्य में तो यह पांच फीसदी के करीब है। लिहाजा यह स्थिति संतोषजनक है। लेकिन अभी से यह व्याख्या करना उचित नहीं है कि कोरोना वायरस का 'पीक' गुजर चुका है अथवा गुजरने की प्रक्रिया में है। कोरोना संक्रमण कम हो रहा है, लिहाजा हम कोरोना-मुक्त हो रहे हैं। फिलहाल ऐसे मुगालतों से बचें। यदि टेस्ट जांच के आधार पर विश्लेषण करें, तो फिलहाल हमारी 1.5 फीसदी आबादी का ही सच सामने आया है कि कितने संक्रमित हैं और कितने संक्रमित होकर स्वस्थ हो चुके हैं। सिर्फ इतनी-सी जांच के आधार पर कोरोना वायरस के प्रभावों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। विश्व स्वास्थ्य संगठन तक का कहना है कि यह नया वायरस है, लिहाजा इसकी अगली करवट क्या होगी, यह कहना अभी असंभव है। अभी तो दुनिया कोरोना के मौजूदा कहर को झेल रही है। करीब सात लाख मौतें हो चुकी हैं। यह कोई सामान्य आंकड़ा नहीं है, लेकिन कोरोना की दूसरी और तीसरी लहर की संभावनाओं से खौफ पैदा किया जा रहा है। यह असंगत सोच है। कोरोना के अलावा कुछ और बीमारियां ऐसी हैं, जिनसे मनुष्य लड़ता रहा है और अपना अस्तित्व बरकरार रखा है। कोरोना फैलता रहेगा, तो उसका टीका या कोई दवा के बाजार में आने का भी वक्त हो जाएगा। बहरहाल हमने कोरोना वायरस की समीक्षा करने से अपनी बात शुरू की थी। भारत में मात्र 3 फीसदी राज्यों और शहरों में लॉकडाउन शेष है, बाकी देश अनलॉक हो चुका है। बाजार, उद्योग-धंधे, सरकारी और निजी कार्यालय खुल चुके हैं। बेशक कोरोना से जुड़ी तालाबंदी ने करीब 10 करोड़ लोगों की नौकरियां छीन ली थीं, लेकिन नई नौकरियों के आमंत्रण, नए रोजगार भी मिल रहे हैं। जो नौकरी की मुख्यधारा से पिछड़ चुके हैं, वे भी किसी न किसी काम में व्यस्त होंगे! देश में औसतन बेरोजगारी-दर 7-8 फीसदी के बीच झूल रही है। यह डरावना प्रतिशत नहीं है, बल्कि माना चाहिए कि वैश्विक महामारी की जकड़न से मुक्त होकर अर्थव्यवस्था खिलखिलाने लगी है। मायूसी, अवसाद और नकारात्मक प्रतिक्रिया के भी उदाहरण मौजूद होंगे। अनलॉक-तीन में जिम और योग केंद्र खोलने की इजाजत दी गई है। सिनेमा हाल खोलने की भी चर्चा थी, न जाने क्या हुआ? यदि सरकार मेट्रो, अन्य रेलगाड़ियां और ज्यादा से ज्यादा बसें खोलने की भी पहल करती, तो अनलॉक ज्यादा सुविधाजनक और सार्थक होता, क्योंकि सार्वजनिक परिवहन में लगी मोटी अर्थव्यवस्था भी संभल जाती। अब तो वे ऋणात्मक अवस्था में पहुंच रहे हैं।

शिक्षा के डिजिटलीकरण की राह

राजू पांडेय

केंद्र और राज्य सरकारें शिक्षा को ऑनलाइन करना चाहती हैं। सवाल है कि क्या कोविड-19 के चलते शिक्षा को ऑनलाइन करना आवश्यक हो गया है या इसके बहाने जल्द से जल्द शिक्षा को तकनीक के हवाले करने की कोशिश हो रही है। सरकारों को यह भी स्पष्ट करना होगा कि ऑनलाइन शिक्षा के नाम पर जो कुछ चल रहा है वह आपात व्यवस्था है या प्रभावकारी शिक्षण पद्धति। अगर यह आपात व्यवस्था है, तो कोविड-19 की दवा ढूंढ लिए जाने के बाद पुरानी शिक्षा पद्धति की ओर वापसी की संभावनाएं बचती हैं। पर अगर ऐसा नहीं है और हम प्रभावकारी शिक्षण पद्धति की ओर बढ़ रहे हैं, तो हमारे प्रयास न केवल नाकाफी, बल्कि अवैज्ञानिक भी हैं और इनका स्वरूप शिक्षा के अधिकार की मूल भावना पर आघात करने वाला है।

अगर हमारा मकसद प्रभावकारी शिक्षण है, तो हमें विशेषज्ञों के इस आकलन को स्वीकार करना होगा कि अभी हम शिक्षक-छात्र की प्रत्यक्ष अंतःक्रिया के वर्तमान पारंपरिक स्वरूप से ऑनलाइन शिक्षा की ओर पहला कदम रख रहे हैं। अभी हम संपूर्ण ऑनलाइन शिक्षा के पहले चरण में हैं। द्वितीय चरण में शत प्रतिशत पाठ्यक्रम ऑनलाइन हो, यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए, जब मूल्यांकन आदि भी पूर्णतः ऑनलाइन होगी। तृतीय चरण कोर्स क्रेडिट की संपूर्ण ऑनलाइन डिलीवरी का होगा, जब ऑनलाइन डिग्रियां दी जा सकेंगी। अगर हमारी शुरुआत ही यह जाहिर करती हो कि हमारी ऑनलाइन शिक्षा का भावी स्वरूप असमावेशी होगा, जिसमें देश के ग्रामीण विद्यार्थियों और निर्धन छात्र-छात्राओं के लिए या तो असमान अवसर होंगे या अवसरों का अभाव होगा, तो चिंता स्वाभाविक है।

समस्याएं अनेक हैं। नीति आयोग का स्ट्रेटेजी फॉर इंडिया ऐट 75 नामक दस्तावेज यह स्वीकार करता है कि हमारे पचपन हजार गांव बिना मोबाइल इंटरनेट कवरेज के हैं और देश में इंटरनेट की गुणवत्ता और विश्वसनीयता की समस्या हमारी प्रगति को बाधित करती है। ग्रामीण इलाकों में रहने वाले विद्यार्थियों में से केवल अट्ठाईस प्रतिशत के पास घर पर इंटरनेट उपलब्ध है। क्वाकैली सिमंड्स का एक सर्वेक्षण बताता है कि भारत की अस्सी फीसद आबादी इंटरनेट के लिए मोबाइल हॉट स्पॉट का उपयोग करती है और हॉट स्पॉट का उपयोग करने वाले छियानबे प्रतिशत विद्यार्थियों को

> *तृतीय चरण कोर्स क्रेडिट की संपूर्ण ऑनलाइन डिलीवरी का होगा, जब ऑनलाइन डिग्रियां दी जा सकेंगी। अगर हमारी शुरुआत ही यह जाहिर करती हो कि हमारी ऑनलाइन शिक्षा का भावी स्वरूप असमावेशी होगा, जिसमें देश के ग्रामीण विद्यार्थियों और निर्धन छात्र-छात्राओं के लिए या तो असमान अवसर होंगे या अवसरों का अभाव होगा, तो चिंता स्वाभाविक है।*

इंटरनेट कनेक्टिविटी में दिक्कत हुई तथा उनकी पढ़ाई बाधित हुई। क्यूएस की 'कोविड-19 = ए वेकअप कॉल फॉर टेलीकॉम सर्विस प्रोवाइडर्सछ शीर्षक रिपोर्ट बताती है कि भारत में संचार टेक्नोलॉजी की गुणवत्ता अभी इतनी नहीं है कि वह विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा सही और पूर्ण रूप से प्रदान कर सके। देश में केवल क्या ऑनलाइन शिक्षा उस गरीब विद्यार्थी को बेहतरीन शिक्षकों द्वारा तैयार उच्च कोटि की शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने का जरिया बनेगी, जो दक्ष शिक्षकों और अच्छी पुस्तकों की कमी से निरंतर जूझता रहता है? क्या ऑनलाइन शिक्षा देश के उस मेधावी युवा को देश और दुनिया के बेहतरीन संस्थानों में पढ़ने का अवसर प्रदान करेगी, जो सकती हैं। पर अनेक बुनियादी प्रश्न अनुत्तरित हैं। शिक्षा के डिजिटलीकरण के लिए भारी संख्या में स्मार्ट फोन, लैपटॉप और डेस्कटॉप कंप्यूटरों की आवश्यकता होगी। क्या इनकी गुणवत्तापूर्ण और मुफ्त या रियायती दर पर आपूर्ति आम जरूरतमंद निर्धन परिवार को की जा सकेगी? क्या पांच से पंद्रह वर्ष आयु के बालक-बालिकाओं ध्यान नहीं दिया गया? क्या हम शिक्षार्थी केंद्रित मुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम तैयार करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं? क्या डिजिटल तकनीक में दक्ष युवाओं को शिक्षण कार्य का प्रशिक्षण देना भी एक व्यावहारिक विकल्प हो सकता है?

क्या अब हम धीरे-धीरे पूर्णकालिक शिक्षकों की छंटनी कर शिक्षा को अंशकालिकों के हवाले करने की ओर अग्रसर हो रहे हैं? शालाएं विद्यार्थी के सामाजीकरण और उसके व्यक्तित्व में आधारभूत नागरिक और मानवीय गुणों के विकास में सहायक होती हैं। ऑनलाइन शिक्षा पर संपूर्ण निर्भरता क्या बच्चे के शारीरिक और मानसिक विकास को गंभीर रूप से बाधित करने वाली नहीं है? क्या बाल

ग्रामीण इलाकों में रहने वाले विद्यार्थियों में से केवल अट्ठाईस प्रतिशत के पास घर पर इंटरनेट उपलब्ध है। क्वाकैली सिमंड्स का एक सर्वेक्षण बताता है कि भारत की अस्सी फीसद आबादी इंटरनेट के लिए मोबाइल हॉट स्पॉट का उपयोग करती है और हॉट स्पॉट का उपयोग करने वाले छियानबे प्रतिशत विद्यार्थियों को इंटरनेट कनेक्टिविटी में दिक्कत हुई तथा उनकी पढ़ाई बाधित हुई।

आठ प्रतिशत परिवार ऐसे हैं, जिनमें पांच से चौबीस वर्ष आयु के सदस्यों के पास कंप्यूटर और इंटरनेट दोनों है। ऑनलाइन शिक्षा को शिक्षा-व्यवस्था की इस अराजक, भयानक और हताशाजनक स्थिति के रामबाण इलाज के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। कई शिक्षाविद मानते हैं कि ऑनलाइन शिक्षा की ओर यह कदम जबरिया जरूर, पर फायदेमंद है। बेशक ऑनलाइन शिक्षा ही भविष्य की शिक्षा है, पर हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि शिक्षा के डिजिटलीकरण की प्रक्रिया में हमारी प्राथमिकताएं क्या हैं? क्या ऑनलाइन शिक्षा की रूपरेखा उस निर्धन व्यक्ति को केंद्र में रख कर बनाई जा रही है, जो अभावग्रस्त सरकारी स्कूलों तक भी किसी तरह पहुंच बना पाता है, निजी शालाओं की विलासिता का सपना भी देखना जिसके लिए पाप है? अर्थाभाव के कारण अन्य शहर या अन्य देश जाकर पढ़ने के विषय में सोच भी नहीं पाता? क्या ऑनलाइन शिक्षा अभावग्रस्त सरकारी स्कूलों और सर्वसुविधायुक्त निजी स्कूलों के बीच की खाई को मिटाने में समर्थ होगी? क्या ऑनलाइन शिक्षा बीच में स्कूल छोड़ने की समस्या का स्थायी समाधान दे पाएगी? क्या शिक्षा का डिजिटलीकरण शिक्षा माफियाओं पर निर्णायक प्रहार कर पाने में समर्थ हो पाएगा? पर जो कुछ चल रहा है, उसमें इन प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल रहे हैं, बल्कि नए प्रश्न खड़े हो रहे हैं। अनेक विशेषज्ञों ने व्यय का आकलन कर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि पारंपरिक शिक्षा में अधोसंरचना के विकास और मानव संसाधन पर जितना व्यय होता है, उससे कहीं कम खर्च में ऑनलाइन शिक्षा की बेहतरीन सुविधाएं उपलब्ध कराई जा को स्मार्टफोन देना उचित होगा? अभी तक हमारी आशंकाएं यही रही हैं कि मोबाइल फोन बच्चों को वास्तविक जगत से काट देते हैं, बच्चे आभासी दुनिया के खतरनाक खेलों के पीछे पागलपन की हद तक आकर्षित हो जाते हैं और उनका मानसिक विकास बाधित होता है। क्या इन आशंकाओं के बीच विद्यार्थियों के लिए खास तरह के स्मार्टफोन बनाने होंगे, जिनमें पाठ्य सामग्री ही भरी होगी? क्या हम शिक्षकों को शिक्षण कार्य हेतु विशेष रूप से तैयार ऑनलाइन शिक्षण उपकरण उपलब्ध कराएंगे? क्या इंटरनेट कनेक्टिविटी और कंप्यूटिंग डिवाइस के अभाव की स्थिति को देखते हुए रेडियो और टेलीविजन द्वारा शिक्षा एक विकल्प हो सकती है? 1970 के दशक से इनका प्रयोग शिक्षण हेतु प्रारंभ हो गया था, फिर क्या हुआ कि इन पर समुचित मनोविज्ञान और शिक्षण कौशल में दक्ष शिक्षक का स्थान यांत्रिक शिक्षा ले सकती है? कम आयु के विद्यार्थियों से आत्मानुशासन की अपेक्षा नहीं की जा सकती। उन्हें अपने व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए एक जीवित-जाग्रत सचेतक, मार्गदर्शक और प्रेरक चाहिए होता है। क्या ऑनलाइन शिक्षा में इस पक्ष को अनदेखा किया जाएगा? हर घर में न इतना स्थान होता है न ऐसा वातावरण, जहां एकाग्रचित्त होकर पढ़ा जा सके। शाला का वातावरण और शिक्षकों की उपस्थिति विद्यार्थियों को मनोयोग से पढ़ने में सहायता देती है। क्या ऑनलाइन शिक्षा यह वातावरण और अनुशासन दे पाएगी? अनेक विशेषज्ञ अफ्रीकी देशों द्वारा अपनाए गए पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल को अपनाने की सलाह दे रहे हैं- जैसे आईबीएम द्वारा केन्या एजुकेशन फाउंडेशन के साथ अनुबंध।

opensearch

राखी के धागों में नारी रक्षा के बीज

ललित गर्ग

रक्षाबन्धन हिन्दूधर्म का प्रमुख सांस्कृतिक, सामाजिक और पारिवारिक पर्व है। यह आपसी संबंधों की एकबद्धता, प्रेम एवं एकसूत्रता का सांस्कृतिक उपक्रम है। प्यार के धागों का यह एक ऐसा पर्व जो घर-घर मानवीय रिश्तों में नवीन ऊर्जा का संचार करता है। यह जीवन की प्रगति और मैत्री की ओर ले जाने वाला एकता एवं स्नेह का एक बड़ा पवित्र त्यौहार है। रक्षा का अर्थ है बचाव और मध्यकालीन भारत में जहां कुछ स्थानों पर महिलाएं असुरक्षित महसूस करती थी, वे पुरुषों को अपना भाई मानते हुए उनकी कलाई पर राखी बांधती थी। इस प्रकार राखी भाई और बहन के बीच प्यार के बंधन को मजबूत बनाती है तथा इस भावनात्मक बंधन को पुनर्जीवित करती है। राखी के धागों से भाई-बहन ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवीय संवेदनाओं का गहरा नाता रहा है। भाई और बहन के रिश्ते को यह फौलाद-सी मजबूती देने वाला है। आदर्शों की ऊंची मीनार है। सांस्कृतिक परंपराओं की अद्वितीय कड़ी है। रीति-रिवाजों का गौरवपूर्ण सम्मान है।

रक्षाबन्धन एक हिन्दू त्यौहार है जो प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। रक्षाबन्धन में राखी या रक्षासूत्र का सबसे अधिक महत्त्व है। राखी कच्चे सूत जैसे सस्ती वस्तु से लेकर रंगीन कलावे, रेशमी धागे तथा सोने या चाँदी जैसी महंगी वस्तु तक की हो सकती है। सगे भाई बहन के अतिरिक्त अनेक भावनात्मक रिश्ते भी इस पर्व से बँधे होते हैं जो धर्म, जाति और देश की सीमाओं से परे हैं। सीमाओं पर जवानों को राखी बांधने का भी प्रचलन है, इस तरह रक्षाबन्धन आत्मीयता और स्नेह के बन्धन से रिश्तों को मजबूती प्रदान करने का पर्व है। यही कारण है कि इस पर्व के साथ न केवल बहन भाई के लिये अपितु अन्य रिश्तों एवं सम्बन्धों में प्रगाढ़ता, आत्मीयता एवं सौहार्द का सन्देश है। इस दिन ब्राह्मण अपने पवित्र जनेऊ बदलते हैं और एक बार पुनः धर्मग्रन्थों के अध्ययन के प्रति स्वयं को समर्पित करते हैं।

प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों के उपदेश की पूर्णाहुति इसी दिन होती थी। भारत में प्राचीन काल में जब स्नातक अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात गुरुकुल से विदा लेता था तो वह आचार्य का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उसे रक्षासूत्र बाँधता था जबकि आचार्य अपने विद्यार्थी को इस कामना के साथ रक्षासूत्र बाँधता था कि उसने जो ज्ञान प्राप्त किया है वह अपने भावी जीवन में उसका समुचित ढंग से प्रयोग करे ताकि वह अपने ज्ञान के साथ-साथ आचार्य की गरिमा की रक्षा करने में भी सफल हो। इसी परम्परा के अनुरूप आज भी किसी धार्मिक विधि विधान से पूर्व पुरोहित यजमान को रक्षासूत्र बाँधता है और यजमान पुरोहित को। इस प्रकार दोनों एक दूसरे के सम्मान की रक्षा करने के लिये परस्पर एक दूसरे को अपने बन्धन में बाँधते हैं। इसीदिन गुरु उन्नत शासन के लिये राजाओं के हाथों में रक्षासूत्र बाँधते थे। इसलिए आज भी इस दिन ब्राह्मण अपने यजमानों को राखी बाँधते हैं। प्रकृति भी जीवन की रक्षक हैं इसलिए रक्षाबंधन के दिन कई स्थानों पर वृक्षों को भी राखी बांधी जाती है। अब तो प्रकृति संरक्षण हेतु वृक्षों को राखी बाँधने की परम्परा भी प्रारम्भ हो गयी है। हिन्दुस्तान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पुरुष सदस्य परस्पर भाईचारे के लिये एक दूसरे को भगवा रंग की राखी बाँधते हैं। यह सांस्कृतिक पर्व बहनों में उमंग और उत्साह को संचरित करता है, वे अपने प्यारे भाइयों के हाथ में राखी बांधने को आतुर होती हैं। बेहद शालीन और सात्विक यह पर्व सदियों पुराना है- तब से अब तक नारी सम्मान एवं सुरक्षा पर केन्द्रित यह विलक्षण पर्व है। इस दिन बहनें अपने भाई के दायें हाथ पर राखी बाँधकर उसके माथे पर तिलक करती हैं और उसकी दीर्घ आयु की कामना करती हैं। बदले में भाई उनकी रक्षा का वचन देता है। ऐसा माना जाता है कि राखी के रंगबिरंगे धागे भाई-बहन के प्यार के बन्धन को मजबूत करते हैं और सुख-दुख में साथ निभाने का विश्वास दिलाते हैं। सगे भाई बहन के अतिरिक्त अनेक भावनात्मक रिश्ते भी इस पर्व से बँधे होते हैं जो धर्म, जाति और देश की सीमाओं से परे हैं। यह पर्व आत्मीयता और स्नेह के बन्धन से रिश्तों को मजबूती प्रदान करने का पर्व है।

राखी के त्योहार का ज्यादा महत्व पहले उत्तर भारत में था। आज यह पूरे भारत में बड़े उत्साह से मनाया जाता है। महाराष्ट्र में इसे नारली पूर्णिमा के नाम से मनाया जाता है। लोग समुद्र में वरुण राजा को नारियल दान करते हैं। नारियल के तीन आंखों को भगवान शिव की तीन आंखें मानते हैं। दक्षिण भारत में इसे अवनी अविट्टम के नाम से जाना जाता है। पुराने जमाने में रक्षाबंधन का अलग महत्व था। आवागमन के साधन और सुविधाएं नहीं थीं। इसलिए ससुराल गयी बेटी के लिए यह सावन के महीने का विशेष पर्व था। राखी के बहाने स्वजनों और भाइयों से भेंट की भावना छिपी होती थी। सभी शादीशुदा लड़कियां मायके आती थीं। सखी-सहेलियां आपस में मिलती थीं, नाचती-गाती थी और अपने लगे हाथ सुख-दुख भी मिल-बांट लेती थीं। राखी का त्योहार कब शुरू हुआ इसे ठीक से कोई नहीं जानता। कहते हैं देव और दानवों में जब युद्ध शुरू हुआ तो दानव हावी होते नजर आने लगे। इससे इन्द्र बड़े परेशान हो गये। वे घबराकर वृहस्पति के पास गये। इन्द्र की व्यथा उनकी पत्नी इंद्राणी ने समझ ली थी।

अयोध्या विश्व तीर्थाटन केंद्र बने

डॉ. भरत झुनझुनवाला

वर्ष 2014 में अपने चुनावी वायदों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि वह वाराणसी को विश्व की आध्यात्मिक राजधानी बनाएंगे। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण शुरू होने के साथ अयोध्या को आध्यात्मिक नगरी बनाने का एजेंडा हाथ में लिया जा सकता है। वैश्विक दृष्टि से अयोध्या की स्थिति वाराणसी से उत्तम हो सकती है। ऐसा प्रतीत होता है कि जिस महान व्यक्ति को हिंदू श्री राम के रूप में मानते हैं, उसी व्यक्ति को अब्राहमिक धर्मजन यानी यहूदी, ईसाई और मुस्लिम जन इब्राहिम या अब्रहाम के रूप में मानते हैं। यदि हम राम को केवल हिंदुओं के अवतार मानने के स्थान पर विश्व के सभी धर्मों के जनक के रूप में स्थापित करें तो अयोध्या को विश्व की आध्यात्मिक राजधानी का स्थान प्राप्त हो जाएगा। जिस प्रकार सरकार ने बोधगया, लुम्बिनी एवं कुशीनगर आदि स्थानों को बौद्ध तीर्थाटन सर्किट के रूप में विकसित किया है, उसी प्रकार अयोध्या को भी विश्व तीर्थाटन का केंद्र बनाया जा सकता है। सरयू नदी का सौंदर्य और श्री राम का आदर्श दुनियाभर के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करेगा और दुनियाभर से पर्यटक अयोध्या दर्शन को आएंगे, जिससे राज्य में राजस्व बढ़ेगा और अयोध्यावासियों के लिए रोजगार के अवसर खुलेंगे। आज सऊदी अरब को मक्का से 70000 करोड़ रुपए प्रति वर्ष की आय होती है। इससे चार गुणा आय अयोध्या से हो सकती है।

राम और इब्राहिम के जीवन वृत्त में तमाम समानताएं पाई जाती हैं। जैसे राम के तीन भाई थे जिसमें एक का नाम था लक्ष्मण, इसी के समान इब्राहिम के दो भाई और एक भतीजा था जिनका नाम था लॉट। बाइबिल के अनुसार इब्राहिम का पूर्व का नाम अबराम था। अब का अर्थ है पिता। अतः इब्राहिम का अर्थ हुआ 'पिता राम'। इस प्रकार 'राम' नाम 'इब्राहिम' के अंदर निहित है। इसी प्रकार सीता और सारा, लॉट और लक्ष्मण भी एक ही व्यक्ति के नाम होने के संकेत देते हैं। राम अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ दक्षिण को गए तो इब्राहिम अपनी पत्नी सारा और भतीजे लॉट के साथ दक्षिण को गए। दक्षिण में राम की पत्नी सीता का लंका के राजा रावण के द्वारा हरण किया गया। तत्पश्चात राम ने रावण का वध करके सीता को हासिल किया और अयोध्या वापस लौट आए। ठीक ऐसी ही स्थिति इब्राहिम की भी हुई। जब इब्राहिम दक्षिण गए तो वहां के लोग सारा के नूर पर फिदा हो गए। वे सारा को वहां के फिरान, जिस नाम से वहां के राजा जाने जाते थे, के दरबार में ले गए। सारा के वहां आने के बाद फिरान को मुश्किलों का सामना करना पड़ा। बाइबिल में इस बात का उल्लेख नहीं मिलता है कि क्या मुश्किलें आईं, मात्र इतना ही बताया गया है कि फिरान को परेशानियों का सामना करना पड़ा। तत्पश्चात फिरान ने सारा को इब्राहिम को बाइज्जत वापस लौटा दिया। इसके बाद इब्राहिम अपनी पत्नी सारा के साथ अपने घर 'आई' नामक स्थान पर आए। इब्राहिम के स्थान 'आई' और राम के स्थान 'अयोध्या' के नाम में भी समानता दिखती है। वापस लौटने के बाद इब्राहिम और लॉट के भेड़ पालकों में विवाद हुआ और वे एक-दूसरे से अलग हो गए। इसी के समानांतर दुर्वासा मुनि के प्रकरण के बाद राम और लक्ष्मण में अलगाव हुआ। अन्य समानताओं का भी उल्लेख किया जा सकता है।

इतने से ही झलक मिलती है कि राम और इब्राहिम के जीवन वृत्त में समानता है और यह इनके एक ही व्यक्ति होने के संकेत देते हैं। हिंदू और एब्राहमी धर्मों में प्रमुख अंतर यह दिखता है कि हिंदू मूर्ति की पूजा करते हैं जबकि एब्राहमी धर्म निर्गुण निराकार ईश्वर की साधना करते हैं। लेकिन राम के समय हिंदू धर्म की स्थिति और आज के हिंदू धर्म की स्थिति में अंतर हो सकता है। योग वासिष्ठ के अनुसार युवावस्था में राम जब तीर्थाटन करके आए, तब उनमें वैराग्य आ गया। संसार के प्रति उनकी घोर अरुचि हो गई। उन्होंने कहा कि इस संसार के प्रपंच में पड़ने का क्या लाभ है जब इसका अस्तित्व ही नहीं है।

नीति से नहीं नीयत से सुधरेगी शिक्षा

अजीत द्विवेदी

लंबे इंतजार के बाद नई शिक्षा नीति का मसौदा सरकार ने मंजूर किया। अब इस नीति के आधार पर सरकार कानून बनाएगी और जहां जरूरी होगा वहां पुराने कानूनों को बदला जाएगा। अभी नई शिक्षा नीति सिफारिश के स्तर पर ही है, जिसे कानूनी दस्तावेज नहीं बनाया गया है इसलिए अभी से यह अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है कि अंत में यह किस रूप में सामने आएगा। यह भी अभी अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है कि सरकार इसमें से किस सिफारिश को किस अंदाज में कानूनी रूप देगी। ऊपर से शिक्षा को भारतीय संविधान की समवर्ती सूची में रखा गया है, जिसका मतलब है कि इससे जुड़ी नीतियां बनाने में राज्य सरकारों की भी भूमिका होती है और कई राज्य सरकारों ने अभी से सवाल उठाने शुरू कर दिए हैं। इससे कोई असहमत नहीं हो सकता है कि भारत में शिक्षा और स्वास्थ्य ये दो ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें सुधार सबसे ज्यादा जरूरी है। पर यह सुधार कैसे होगा? क्या सिर्फ नीति बना देने से शिक्षा में बदलाव आ जाएगा? शिक्षा में बदलाव लाने के लिए नीति से ज्यादा नीयत की जरूरत है और सबसे ज्यादा संदेह उसी को लेकर है। नीयत का बड़ा सवाल तो इसी बात को लेकर है कि, जिस नीति पर पिछले पांच साल से विचार हो रहा था और मसौदा दस्तावेज सौंपे जाने के बाद भी एक साल तक इस पर फैसला नहीं हुआ उसे एक वैश्विक महामारी के बीच स्वीकार किया गया है।

सरकार की नीयत पर संदेह को सिर्फ एक उदाहरण से समझा जा सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट ने जिस नई शिक्षा नीति के मसौदे को मंजूर किया है उसमें चार साल के डिग्री कोर्स का प्रावधान है। इसके साथ ही मल्टीपल एक्जिट-एंट्री की बात कही गई है, जिसे बड़ी बात के तौर पर प्रचारित किया जा रहा है। महज पांच-छह साल पहले भाजपा ने इसी नीति का पुरजोर विरोध किया था। इस देश में लोगों की याद्दाश्त इतनी कमजोर है कि किसी को यह बात याद नहीं है कि सात साल पहले दिल्ली विश्वविद्यालय में चार साल के डिग्री कोर्स की सिफारिश की गई थी। तब भाजपा ने इस नीति का पुरजोर विरोध किया था और 2014 के लोकसभा चुनाव में वादा किया था कि उसकी सरकार बनी तो वह चार साल के डिग्री कोर्स को खत्म कर देगी। केंद्र में नरेंद्र मोदी की सरकार बनने के थोड़े दिन बाद ही यह प्रस्ताव वापस भी हो गया। दिल्ली विश्वविद्यालय के उस समय के कुलपति दिनेश सिंह ने चार साल का जो डिग्री कोर्स लागू किया था, उसमें दो साल के बाद डिप्लोमा, तीन साल के बाद डिग्री और चार साल के बाद ऑनर्स के साथ डिग्री देने का प्रावधान था। यह भी प्रावधान था कि जो छात्र चार साल में डिग्री लेंगे वे एक साल में पोस्ट ग्रेजुएट कर सकेंगे। भाजपा की जिद के कारण जून 2015 में यह प्रस्ताव वापस हुआ था और उसके ठीक पांच साल के बाद उसी नीति को हूबहू लागू किया जा रहा है। क्या इससे नीयत का सवाल नहीं पैदा होता है? जो नीति पांच-छह साल पहले बहुत खराब थी वह आज कैसे बहुत अच्छी हो गई? नई शिक्षा नीति में कहा गया है कि शिक्षा का खर्च बढ़ाया जाएगा और सरकार जीडीपी का छह फीसदी शिक्षा पर खर्च करेगी। यह बहुत अस्पष्ट सी बात है। मौजूदा सरकार के पिछले छह साल के कार्यकाल में ऐसा कोई कदम नहीं उठाया गया है, जिससे यह लगे कि सरकार शिक्षा पर खर्च बढ़ाने जा रही है। उलटे शोध पर होने वाले खर्च में और छात्रों को मिलने वाली छात्रवृत्ति के फंड में कटौती होने की खबरें हैं।

राजनीति

हगिया सोफिया का संग्रहालय से मस्जिद बनना: बदल रहा है समय

डॉ.राम पुनियानी

पिछले तीन दशकों में वैश्विक राजनैतिक परिदृश्य में व्यापक परिवर्तन आये हैं। उसके पहले के दशकों में दुनिया के विभिन्न देशों में साम्राज्यवादी और औपनिवेशिक ताकतों से मुक्ति के आन्दोलन उभरे और लोगों का ध्यान दुनियावी मसलों पर केन्द्रित रहा आया। जो देश औपनिवेशिक ताकतों के चंगुल से मुक्त हुए उन्होंने औद्योगीकरण, शिक्षा और कृषि के विकास को प्राथमिकता दी। भारत, वियतनाम और क्यूबा उन देशों में से थे जिन्होंने अपने देश के वंचित और संघर्षरत तबकों के सरोकारों पर ध्यान दिया और धार्मिक कट्टरपंथियों को किनारे कर दिया। इन देशों ने धर्म की दमघोंटू राजनीति से निजात पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। निसंदेह कुछ देश ऐसे भी थे जहाँ के शासकों ने पुरोहित वर्ग से सांठगांठ कर सामंती मूल्यों को जीवित रखने का प्रयास किया और अपने देशों को पिछड़ेपन से मुक्ति दिलवाने की कोई कोशिश नहीं की। ऐसे देशों की नीतियाँ सांप्रदायिक और संकीर्ण सोच पर आधारित थीं। हमारे दो पड़ोसी - पाकिस्तान और म्यांमार - इसी श्रेणी में आते हैं।

सन 1980 के बाद से अनेक कारणों से धर्मनिरपेक्ष-प्रजातान्त्रिक शक्तियां कमजोर पड़ने लगीं और धर्म का लबादा ओढ़े राजनीति का बोलबाला बढ़ने लगा। इस राजनीति ने समावेशी मूल्यों और नीतियों को हाशिये पर ढकेलना शुरू कर दिया, राज्य को जन कल्याणकारी नीतियों से भटकना प्रारंभ कर दिया और शिक्षा और औद्योगीकरण के क्षेत्र में प्रगति को बाधित किया। पिछले तीन दशकों में धर्म के नाम पर राजनीति का दबदबा बढ़ा है। इस्लामवाद, ईसाईवाद, हिंदुत्व और बौद्ध कट्टरपंथियों की आवाजें बुलंद हुई है और ये सभी विभिन्न देशों को विकास की राह से भटका रहे हैं और समाज के बहुसंख्यक तबके को बदहाली में ढकेल रहे हैं।

अमरीका में डोनाल्ड ट्रम्प ईसाई धर्म के नाम पर प्रत्यक्ष और परोक्ष ढंग से अपीलें कर रहे हैं। म्यांमार में अशिन विराथू, बौद्ध धर्म के नाम पर हिंसा भड़का रहे हैं। श्रीलंका में भी कमोबेश यही हालात हैं। वहां वीराथू जैसे लोगों का प्रभाव बढ़ रहा है। भारत में हिंदुत्व की राजनीति परवान चढ़ रही है। अफगानिस्तान के तालिबान अपने देश में ही नहीं वरन पश्चिमी और मध्य एशिया में भी तांडव कर रहे हैं। अफगानिस्तान में भगवान बुद्ध की मूर्तियों का विरूपण इसका उदाहरण है। इसी तरह, अयोध्या में बाबरी मस्जिद का ध्वंस देश के इतिहास का एक दुखद अध्याय है जिसका इस्तेमाल हिन्दू राष्ट्रवादियों ने अपनी राजनीति को आगे बढ़ाने के लिए किया।

ये तो इस बदलाव के केवल प्रत्यक्ष प्रभाव हैं। इसके सामाजिक-आर्थिक प्रभाव भी अत्यंत विनाशकारी हुए हैं। इससे नागरिकों, और विशेषकर अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर गहरी चोट पहुंची है। और यह सब वैश्विक स्तर पर हो रहा है। कुछ दशक पहले तक साम्राज्यवादी ताकतें 'मुक्त दुनिया बनाम एकाधिकारवादी शासन व्यवस्था (समाजवाद)' की बात करतीं थीं।

9/11 के बाद से, 'इस्लामिक आतंकवाद' उनके निशाने पर है। इस समय पूरी दुनिया में अलग-अलग किस्म के कट्टरपंथियों का बोलबाला है। वे प्रजातंत्र और मानव अधिकारों को कमजोर कर रहे हैं। हगिया सोफिया संग्रहालय को मस्जिद में बदले जाने की घटना को इसी सन्दर्भ में देखा जाना चाहिए। कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की ने खलीफा, जो कि ओटोमन (उस्मानी) साम्राज्य का अवशेष था, को अपदस्थ कर, धर्मनिरपेक्षता की राह अपनाई। खलीफा को पूरी दुनिया के मुसलमानों के एक हिस्से की सहानुभूति और समर्थन हासिल था।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक विजय कुमार द्वारा आदित्य ग्राफिक्स, प्रताप भवन 5, बहादुर शाह जफर मार्ग, आई.टी.ओ. नई दिल्ली-110002 से मुद्रित कराकर 1536/108 गणेशपुरा रोड, त्रीनगर दिल्ली-110035 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय कुमार RNI No. : DELHIN/2014/56301
अखबार में प्रकाशित तथ्यों एवं लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं, किसी भी कानूनी वाद विवाद का निपटारा दिल्ली न्यायालय के अधीन होगा। मोबइल : 9210092542 फोन :- 011-27380260 E-mail : opensearchdelhi@gmail.com

दिल्ली में कोरोना से राहत नहीं,रिकवरी दर 89 फीसदी

नई दिल्ली। राजधानी में कोरोना वायरस (कोविड-19) संक्रमण मरीजों की संख्या शुक्रवार को फिर एक हजार से अधिक रही जबकि ठीक होने की संख्या में निरंतर वृद्धि से रिकवरी दर 89 प्रतिशत के पार पहुंच गई। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्रालय की तरफसे आज जारी बुलेटिन के अनुसार पिछले 24 घंटों के दौरान नये मामले 1,195 रहे जबकि सोमवार को यह तेजी से घटकर 613 रह गए थे। दिल्ली में संक्रमितों की कुल संख्या 1,35,598 पहुंच गयी। सोमवार को दिल्ली में 20 जुलाई के बाद कोरोना के मामले फिर एक हजार से कम आए। बीस जुलाई को 54 दिन बाद पहली बार एक हजार से कम 957 मामले आए थे। दिल्ली के लिये राहत की बात यह है कि मरीजों के स्वस्थ होने की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। इस दौरान 1,206 मरीजों के ठीक होने से कुल 1,20,930 लोग संक्रमण को शिकस्त दे चुके है और रिकवरी दर बढ़कर 89.18 फीसदी पहुंच गयी जो गुरुवार को 89.07 प्रतिशत रही थी। इस दौरान 27 और लोगों की मौत होने से मृतकों की कुल संख्या 3,963 हो गयी है। राजधानी में सक्रिय मामलों की संख्या भी और घटकर 10,705 रह गई। इसमें से 5763 होम आइसोलेशन में और 2932 अस्पतालों में भर्ती हैं। शेष का अन्य कोविड केंद्रों पर उपचार चल रहा है। कोरोना जांच में पिछले कुछ दिनों में आई तेजी से कुल जांच का आंकड़ा 1,32,785 पर पहुंच गया है। पिछले 24 घंटों में दिल्ली में 19 हजार से अधिक जांच की गई। दिल्ली में 10 लाख की जनसंख्या पर जांच का औसत 54,357 पहुंच गया है। इसके अलावा कन्टेनमेंट क्षेत्रों की संख्या 694 से घटकर 692 रह गई है।

दिल्ली हिंसा : उच्च न्यायालय ने पूर्व पार्षद इशरत जहां की याचिका खारिज की

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने फरवरी में उत्तरपूर्वी दिल्ली में साम्प्रदायिक हिंसा से संबंधित एक मामले में कांग्रेस की पूर्व पार्षद इशरत जहां की याचिका शुक्रवार को खारिज कर दी। याचिका में जांच पूरी करने के लिए 60 दिन का और वक्त देने के आदेश को चुनौती दी गई थी। जहां पर आतंकवाद विरोधी कानून यूएपीए के तहत मामला दर्ज है।न्यायमूर्ति सुरेश कुमार कैत ने कहा कि निचली अदालत के आदेश में कुछ भी अवैध नहीं है।उच्च न्यायालय ने कहा, ''मौजूदा याचिका में कोई दम नहीं है इसलिए इसे खारिज किया जाता है।'' इशरत जहां को 26 फरवरी को गिरफ्तार किया गया था और उन्होंने निचली अदालत के उस आदेश को चुनौती दी जिसमें मामले में जांच पूरी करने के लिए 90 दिनों की अवधि के अतिरिक्त दो और महीने का वक्त दिया गया।दिल्ली पुलिस ने यह कहते हुए याचिका का विरोध किया कि जहां तक मामले में जांच की अवधि बढ़ाने के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश के फैसले का संबंध है तो उच्च न्यायालय को मामले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।उच्च न्यायालय ने निचली अदालत के 15 जून के आदेश को चुनौती देने वाली जहां की याचिका पर 20 जुलाई को फैसला सुरक्षित रख लिया था। निचली अदालत ने पुलिस को जहां तथा कार्यकर्ता खालिद सैफी के खिलाफ जांच पूरी करने के लिए 60 दिनों का और वक्त दिया था।गौरतलब है कि उत्तर पूर्वी दिल्ली में नागरिकता संशोधन कानून के समर्थकों और विरोधियों के बीच हिंसा के बाद 24 फरवरी को साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे थे जिसमें कम से कम 53 लोगों की मौत हो गई थी और सैकड़ों लोग घायल हो गए थे।

दिल्ली सरकार का पांच दिवसीय सीरो-सर्वे शनिवार से होगा शुरू

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में सीरो-सर्वे का अगला चरण शनिवार को शुरू होना है। अधिकारी दिल्ली में कोविड-19 की स्थिति का विस्तारपूर्वक विश्लेषण करने के लिए पांच दिनों के इस सर्वेक्षण को शुरू करने की तैयारी कर रहे हैं। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने 22 जुलाई को घोषणा की थी कि पिछले सर्वेक्षण के नतीजों का विश्लेषण करने के बाद यह फैसला किया गया है कि हर महीने ऐसे और सर्वेक्षण कराए जाएंगे ताकि राष्ट्रीय राजधानी में कोविड-19 की स्थिति से निपटने के लिए बेहतर नीतियां बनाई जा सके।अगला सीरो-सर्वे एक से पांच अगस्त तक चलेगा।अधिकारियों ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग ने एक विस्तृत योजना बनाई है जिसके तहत हर जिले के चिकित्सा अधिकारी को अपने-अपने अधिकार क्षेत्रों में सर्वेक्षण कराने के लिए कहा गया है।दिल्ली में बृहस्पतिवार को कोरोना वायरस के 1093 के नए मामले आने के साथ ही शहर में संक्रमण के मामले 1.34 लाख से अधिक हो गए जबकि मृतकों की संख्या बढ़कर 3,936 पर पहुंच गई।दिल्ली सरकार ने इससे पहले राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) के साथ मिलकर 27 जून से 10 जुलाई तक सीरो-सर्वे कराया था।केंद्र सरकार ने बताया कि अध्ययन में यह पाया गया था कि दिल्ली में जिन लोगों का सर्वेक्षण किया गया उनमें से 23 प्रतिशत लोग कोरोना वायरस के संपर्क में आए।स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा नतीजों की घोषणा करने के एक दिन बाद जैन ने पत्रकारों से कहा, ''27 जून से 10 जुलाई तक किए सीरो-सर्वे के नतीजे कल आए और यह दिखाते हैं कि करीब एक चौथाई लोगों में एंटीबॉडीज बन गए जिसका मतलब है कि वे संक्रमित हुए थे और स्वस्थ हो गए। इनमें से ज्यादातर लोगों को पता ही नहीं था कि वे संक्रमित हो चुके हैं।''बहरहाल स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने एक से पांच अगस्त तक चलने वाले सर्वेक्षण की ज्यादा जानकारियां साझा नहीं की।दक्षिण दिल्ली जिला प्रशासन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि सर्वेक्षण के बारे में अभी उन्हें कोई निर्देश नहीं दिया गया है लेकिन प्रशासन इसके लिए तैयार है।सीरो-सर्वे में संक्रमण के खिलाफ एंटीबॉडीज मौजूद होने की जांच करने के लिए लोगों के ब्लड सीरम की जांच की जाती है।

कोविड-19 के मामलों को लेकर सिसोदिया ने लोगों को 'डराने' की कोशिश की : भाजपा

नई दिल्ली। भाजपा की दिल्ली इकाई ने शुक्रवार को कहा कि उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने 31 जुलाई तक दिल्ली में कोविड-19 के साढ़े पांच लाख मामले होने की आशंका जता कर लोगों को ''डराने'' की कोशिश की लेकिन केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के हस्तक्षेप के बाद स्थिति पर नियंत्रण पा लिया गया। जून में आम आदमी पार्टी के नेता ने कहा था कि दिल्ली में जुलाई अंत तक कोविड-19 के साढ़े पांच लाख मामले हो सकते हैं और मरीजों के लिए 80,000 बेड की जरूरत पड़ेगी। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष आदेश गुप्ता ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि अरविंद केजरीवाल सरकार को इस पर जवाब देना चाहिए कि उसने लोगों को डराने की कोशिश क्यों की? सिसोदिया ने तो दावा किया था कि जुलाई अंत तक कोरोना वायरस के साढ़े पांच लाख मामले हो सकते हैं। मुद्दे पर सिसोदिया या आप की तरफसे कोई प्रतिक्रिया नहीं आयी है। पिछले कुछ दिनों में राष्ट्रीय राजधानी में कोविड-19 के मामले कम हुए हैं। स्वास्थ्य विभाग के बुलेटिन के मुताबिक दिल्ली में बृहस्पतिवार को 10,743 मरीज थे। बुधवार को 10,770, मंगलवार को 10,887, सोमवार को 10,994 और रविवार को 11,904 मामले थे। गुप्ता ने दावा किया, ''दिल्ली की स्थिति नियंत्रण के बाहर हो गयी थी और मध्य जून में जब गृह मंत्री अमित शाह ने हस्तक्षेप किया तो कोविड-19 के मामले घटने लगे, बेड की उपलब्धता बढ़ गयी और अब केजरीवाल सरकार इसका श्रेय ले रही है।

राजद्रोह मामले में डीएमसी के पूर्व प्रमुख को अग्रिम जमानत मिली

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग (डीएमसी) के पूर्व प्रमुख जफरूल इस्लाम खान को राजद्रोह के एक मामले में शुक्रवार को अग्रिम जमानत दे दी। न्यायमूर्ति मनोज कुमार ओहरी ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए सुनवाई करते हुए 72 वर्षीय खान को राहत दी और उनसे जरूरत पड़ने पर जांच में शामिल होने को कहा। आयोग में खान का कार्यकाल हाल ही में समाप्त हुआ है।न्यामूर्ति ने आदेश सुनाते हुए कहा, 'याचिकाकर्ता (खान) को गिरफ्तारी की सूरत में 50,000 रुपये के निजी मुचलके और इतनी ही राशि का जमानती देने की शर्त पर अग्रिम जमानत दी जाती है।'

एसटीएफ की 49वीं बैठक आयोजित

शिकायतों के निपटान में नॉर्थ डीएमसी, एसडीएमसी और ईडीएमसी द्वारा उठाए गए प्रयासों की सराहना की

नई दिल्ली (ओपन सर्च)

विशेष कार्य बल (एसटीएफ) की 49 वीं बैठक 31.07.2020 को आयोजित की गई। जिसमें सभी स्थानीय निकायों और अन्य संबंधित एजेंसियों के अधिकारी मौजूद थे। 15 जुलाई तक प्राप्त शिकायतों की प्रगति की समीक्षा की गई।

15 जुलाई 2020 तक एसटीएफ में कुल 52,253 शिकायतें मिली हैं और 45,955 शिकायतों पर कार्रवाई शुरू की गई है।

शिकायतों पर की गई कार्रवाई की प्रगति की समीक्षा करते हुए, अध्यक्ष एसटीएफ ने देखा कि लंबित मामलों (पेंडेंसी) में काफी कमी आई है। पिछली एसटीएफ बैठक जो 10.07.2020 को आयोजित की गई थी, से लंबित मामलों की संख्या(पेंडेंसी)12600 से घटकर 6298 हो गई है।

शिकायतों के निपटान में नॉर्थ डीएमसी, एसडीएमसी और ईडीएमसी द्वारा उठाए गए प्रयासों की सराहना की गई है। अध्यक्ष, एसटीएफ ने यूएलबी और सरकारी एजेंसियों को इसी तरह से कार्य को जारी रखने का निर्देश दिया है।

मयूर विहार में,54 टोटलोट्स मेंभूतल के निवासियों द्वारा अवैध रूप से कब्जा कर लिया गया था उसेचरण 1 में वापस प्राप्त करने की ईडीएमसी की कार्रवाई, विशेष रुप से प्रशंसनीय थी। ईडीएमसीने 54 में से 47 टोटलॉट की फैंसिंग की है और शेष टोटलॉट्स की फेंसिंग पर काम चल रहा है जो जल्द ही पूरा हो जाएगा। इसके अलावा, शकरपुर, कृष्णा नगर, गांधी नगर मुख्य सड़क, मयूर विहार फेज -1 आदि सहित 14 प्रमुख सड़कों पर अनधिकृत अतिक्रमण हटाया गया है।

मुख्य अभियंता-मुख्यालय, उत्तर डीएमसी ने बताया किडीएमसी द्वारा टी -67, बलजीत नगर, एसके -35 सिद्धोरा कलां, बी -2/8 सेक्टर -11, रोहिणी की संपत्ति को ढहाने की बड़ी कार्रवाई की गई है।

इसी तरह की कार्रवाई एसडीएमसी द्वारा की गई है। अपर आयुक्त, एसडीएमसी ने बताया कि पाली गांव में ढहाने का बड़ा काम किया गया है और वसंत कुंज, मुनिरका, आर.के.पुरमछतरपुर, लाडो सराय, हौज खास, कैलाश कॉलोनी, ग्रीन पार्क, खानपुर आदि सहित 28 सड़कों पर अतिक्रमण हटाया गया है।

1 जुलाई से 15 जुलाई 2020 के बीच शहरी स्थानीय निकायों द्वारा लगभग 280 किमी लंबी सड़क पर अतिक्रमण-रोधी अभियान शुरू किया गया है। ईडीएमसीऔरएसडीएमसीने क्रमशः 135 किमी और 103 किमी सड़क से अतिक्रमण हटाया है। सभी शहरी स्थानीय निकायों(यूएलबी) और लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने बताया कि सड़कों से लगातार अस्थायी अतिक्रमण नियमित रूप से हटाया जा रहा है। सड़कों से अतिक्रमण हटाने का लक्ष्य सभी शहरी स्थानीय निकायों (यूएलबी) और लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) को दिया गया था।

अध्यक्ष, एसटीएफ ने पुनः दोहराया कि कानून के अनुसार अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई करने के लिएयूएलबी और सरकारी एजेंसियों द्वारा अथक समन्वित प्रयास जारी रखने होंगे। संयुक्त पुलिस आयुक्त, ट्रैफिक पुलिस ने आश्वासन दिया कि सड़कों से अतिक्रमण हटाने और अनधिकृत निर्माण पर प्रभावी ढंग से कार्रवाई करने के लिए सभी सहायता प्रदान की जाएगी।

समाज के विकास में प्रजापति समाज की बड़ी भूमिका है : आदेश गुप्ता

भाजपा प्रजापति समाज के उत्थान और विकास के लिए प्रतिबद्ध है - आदेश गुप्ता

नई दिल्ली (ओपन सर्च)

प्रजापति राजनीति मंच के प्रतिनिधियों ने आज दिल्ली भाजपा अध्यक्ष श्री आदेश गुप्ता से मिलकर उन्हें अध्यक्ष बनने पर बधाई दी। इस अवसर पर प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष श्री राजीव बब्बर, प्रजापति राजनीति मंच अध्यक्ष श्री प्रणब टेकचंद, संयोजक श्री राकेश प्रजापति, श्री कृष्ण सरवारा, श्रीमती रेखा गोला, श्रीमती विनीता गोला, श्रीमती सुनीता गोला सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे। श्री आदेश गुप्ता ने प्रजापति राजनीति मंच के प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त करते हुये उनको आश्वस्त किया कि दिल्ली भाजपा सदैव प्रजापति समाज को साथ लेकर विकास पथ पर चलेगी। उन्होंने कहा कि समाज के विकास में प्रजापति समाज की बड़ी भूमिका है। कौन ऐसा परिवार होगा जिस परिवार में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रजापति समाज की पहुँच न हो। पर्व और त्यौहार प्रजापति समाज की उपस्थिति के बिना संभव हो ही नहीं सकता।

भाजपा प्रजापति समाज के उत्थान और विकास के लिए प्रतिबद्ध है। श्री राकेश प्रजापति ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी एकमात्र ऐसी पार्टी है जिसने प्रजापति समाज के लोगों को तरक्की और रोजगार के साथ-साथ हुनर को पहचान दिलाई। इतना ही नहीं सरकार से लेकर संगठन तक में प्रजापति समाज की भागीदारी सुनिश्चित की गई है। प्रजापति समाज भाजपा के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करता रहा है।

भारतीय जीवन बीमा निगम ने वित्तीय परिणाम 2019-2020 की घोषणा की

नई दिल्ली/मुंबई

भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी ऑफ इंडिया), भारत के सबसे बड़े जीवन बीमाकर्ता, ने मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए अपने अंकेक्षित आंकड़ों की घोषणा की है। मार्च 2020 के अंत तक निगम द्वारा नव व्यवसाय के प्रदर्शन में अपने प्रथम वर्ष के प्रीमियम में 25.17: की वृद्धि दर्ज की है, जो कि 1,77,977.07 करोड़ रुपये का अब तक का सबसे सर्वोच्च आंकड़ा है। पेंशन और ग्रुप सुपरनेशन बिजनेस ने एक लाख करोड़ को पार करते हुए इतिहास रचा है और नव व्यवसाय प्रीमियम इनकम के रूप में 1,26,696.21 करोड़ रुपये वसूली की जो पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान संग्रह 90848.86 करोड़ रुपए से 39.46: अधिक है। मार्च 2020 के अंत तक निगम ने कुल प्रीमियम आय 3,79,062.56 करोड़ रुपये का संग्रह किया, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान एकत्र किए गए 3,37,185.40 करोड़ रुपये की तुलना में यह 12.42: की शानदार वृद्धि है 31.3.2020 की समाप्ति अवधि के दौरान कुल पॉलिसी भुगतान 2,54,222.27 करोड़ रुपये रहा, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान 2,50,936.23 करोड़ रुपये था, जिसमें 1.31: की वृद्धि है।

अयोध्या को सील करने की तैयारी, 4 अगस्त से नहीं मिलेगा प्रवेश

opensearch

नई दिल्ली (एजेंसी)

वर्षों के इंतजार के बाद अयोध्या में 5 अगस्त को होने वाले राम मंदिर भूमि पूजन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन व आतंकी हमले की आशंका को लेकर सुरक्षा को बढ़ा दी गई है। अयोध्या के चारों ओर के क्षेत्र को सील करने की तैयारी चल रही है। इसके तहत अयोध्या समेत फैजाबाद शहर में प्रवेश के सभी मार्गों पर पूर्व में किए इंतजामों की मॉनिटरिंग की जा रही है। वहीं मुख्य कार्यक्रम की पूर्व संध्या से किसी को भी अयोध्या में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

लखनऊ के रास्ते सड़क से आने वाले वीवीआइपी को सहादतगंज से अयोध्या में प्रवेश देने की योजना बनाई गई है। साथ ही अयोध्या जिले के पड़ोसी जनपद बस्ती, गोंडा, अंबेडकरनगर, बाराबंकी, सुलतानपुर, अमेठी आदि में पूर्व में ही नोडल अधिकारियों की नियुक्ति की जा चुकी है। इनके नेतृत्व में इन जनपदों की पुरलिस बार्डर पर कड़ी निगरानी रखेगी। वहीं जल मार्गों पर कड़ी निगरानी रखने के लिए पीएसी, जल पुलिस की तैनाती की जा रही है। वंदे भारत मिशन के तहत अबतक 8.79 लाख भारतीय स्वदेश लौटे प्रधानमंत्री के अयोध्या आगमन को लेकर हाईवे समेत अयोध्या के सभी छोटे-बड़े प्रवेश मार्गों पर बैरियर लगाए जाने की तैयारी है। यह सभी आगामी तीन अगस्त से कार्य करना शुरू कर देंगे। चार अगस्त की शाम से अयोध्या में प्रवेश प्रतिबंधित किया जा सकता है। इसके लिए सभी मार्गों पर पूर्व में किए इंतजामों की दोबारा मॉनिटरिंग की जा रही है। अयोध्या में प्रवेश के प्रमुख रास्ते जालपा देवी चौराहा, मोहबरा बाईपास, बूथ नंबर चार, रामघाट, साकेत पेट्रोल पंप, बंधा तिराहा, हनुमान गुफा समेत अन्य छोटे रास्तों को बैरीकेडिंग लगाकर सील करने की तैयारी है। इसके अलावा हाइवे पर भी पूर्व में लगे बैरीकेडिंग पर अतिरिक्त सुरक्षाकर्मी तैनात कर आने जाने वाले लोगों की सघन तलाशी ली जाएगी। पीएम सुरक्षा को लेकर कुल सात जोन बनाए गए हैं, इसमें हनुमानगढ़ी और सरयू तट जोन भी शामिल है। साकेत महाविद्यालय से लेकर नयाघाट तक के मुख्य मार्ग को सुपर सिक्योरिटी जोन में रखा गया है।

इस मार्ग पर साकेत महाविद्यालय से आयोजन स्थल तक करीब एक किमी जिस पर प्रधानमंत्री सड़क के रास्ते सफर करेंगे, इन मार्गों पर लगे कई बैरियर सक्रिय हो गए हैं। श्रीरामजन्मभूमि परिसर में तीन अगस्त से पंचांग पूजन का होगा शुभारम्भ अयोध्या मुख्य मार्ग से राम जन्मभूमि की तरफ जाने वाले सभी रास्ते सील किए जाने की तैयारी है। वहीं संभावना है कि पीएम नरेंद्र मोदी हनुमानगढ़ी में दर्शन और पूजन भी कर सकते हैं, इसे ध्यान में रखते हुए मुख्य मार्ग पर यातायात बंद किया जा सकता है। पीएम के दौरे को लेकर अयोध्या के पड़ोसी जनपदों को भी अलर्ट पर रखा गया है।

हड्डियों-जोड़ों की बीमारियों की रोकथाम के लिए देश भर में चलेगा अभियान

नई दिल्ली.एजेंसी

एक समय हड्डियों और जोड़ों की बीमारियां सिर्फ उम्रदराज लोगों की परेशानियां मानी जाती थीं लेकिन बदलती जीवनशैली और तनाव के कारण इन दिनों युवक भी इन समस्याओं से ग्रस्त हो रहे हैं। इंडियन आर्थोपेडिक एसोसिएशन ने इन समस्याओं के बढ़ते प्रकोप के मद्देनजर चार अगस्त को मनाए जाने वाले नेशनल बोन एंड ज्वाइंट दिवस के सिलसिले में देशभर में अगस्त के पहले सप्ताह के दौरान जागरूकता कार्यक्रम चलाने की घोषणा की है।

इस साल का मुख्य थीम 'डिजेनेरेटिव डिजिज में विकृतियों की रोकथाम' है। हड्डियों और जोड़ों में विकृतियां हड्डियों के बढ़ जाने, उनका आकार बदल जाने तथा जोड़ों के झुकाव बदल जाने के कारण होती है और इन कारणों से विकलांगता, अवसाद और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं होती हैं। इसके कारण मरीजों को पंगु जीवन जीना पड़ता है और इन समस्याओं के उपचार में मरीजों को काफी खर्च उठाना पड़ता है। दिल्ली के मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के वरिष्ठ आर्थोपेडिक सर्जन तथा दिल्ली आर्थोपेडिक एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. शरद के अग्रवाल ने कहा कि इंडियन आर्थोपेडिक एसोसिएशन के साथ मिलकर दिल्ली आर्थोपेडिक एसोसिएशन उम्र के साथ होने वाली आर्थराइटिस और ओस्टियो आर्थराइटिस जैसी आर्थोपेडिक समस्याओं की रोकथाम के बारे में आम लोगों को जागरूक करने के लिए विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है।

उन्होंने कहा, 'उपचार से कहीं बेहतर है बचाव और इसी को ध्यान में रखकर हम लोगों को इस बात के लिए प्रेरित कर रहे हैं कि वे जीवन शैली में बदलाव लाकर खान दूपान में सुधार लाकर तथा नियमित व्यायाम करके जोडों एवं हड्डियों की समस्याओं की रोकथाम करें तथा जोडों एवं हड्डियों में विकृतियां नहीं आने दें।' दिल्ली ऑर्थोपेडिक एसोसिएशन के सचिव एवं सफदरजंग अस्पताल में स्पोर्ट्स इंजरी सेंटर के प्रोफेसर डॉ. हितेश ने कहा, 'भारत के लोगों के औसत जीवन काल में वृद्धि हुई है जो इस समय 68.8 वर्ष है और ऐसे में उम्र के साथ होने वाली समस्याएं भी बढ़ गयी हैं।

उम्र के साथ बढ़ने वाली डिजेनेरेटिव रोगों का कोई इलाज नहीं है ऐसे में जरूरी है कि लोग ऐसे उपाय अपनाएं ताकि ये रोग देर से हों तथा कम तेजी से बढ़ें। इसके लिए जरूरी है कि हम अपनी वर्तमान जीवन शैली में सुधार करें। शरीर के वजन को नियंत्रित रखें, नियमित रूप से व्यायाम करें तथा कैल्शियम और विटामिन डी से भरपूर आहार का सेवन करें। विशेषज्ञों ने कोविड महामारी के दौरान लोगों को खासतौर पर अधिक उम्र के लोगों को खास सावधानी रखने और जोड़ों एवं हड्डियों की चोटों से बचे रहने की सलाह दी है।

हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के 162वें प्रकाश दिवस पर...

संत राजिन्दर सिंह जी महाराज का शिकागो से संदेश

नई दिल्ली (ओपन सर्च)

हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के पास तरह-तरह के लोग आते थे। भारतवर्ष से भी और भारतवर्ष से बाहर के भी। उन्होंने उनका ध्यान प्रभु की ओर किया और उनके अंदर जो प्रभु का शब्द चल रहा है उसके साथ जोड़ा और उनकी ज़िंदगी में एक बदलाव ला दिया।

सावन कृपाल रूहानी मिशन के प्रमुख संत राजिन्दर सिंह जी महाराज ने हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के 162वें प्रकाश दिवस के उपलक्ष्य में यू-ट्यूब पर टेलीकास्ट के ज़रिये अपना पावन संदेश समस्त मानवजाति को दिया। सावन कृपाल रूहानी मिशन के अध्यक्ष संत राजिन्दर सिंह जी महाराज ने इस विशेष अवसर पर शिकागो से प्रसारित अपने संदेश में कहा कि, हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज हमें बार-बार यही समझाया करते थे कि हमारे दिलों में सभी के प्रति आदर भाव हो। चाहे कोई अमीर हो या गरीब, चाहे कोई पढ़ा लिखा हो या अनपढ़ हो, एक जाति का हो या दूसरी का।

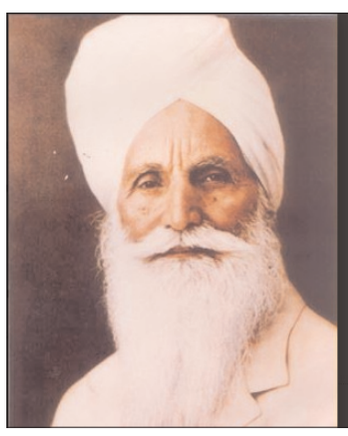

उन्होंने लाखों-करोड़ों लोगों को प्रभु के साथ जोड़ा, उन्हें ज़िंदगी का मकसद समझाया और उन्हें अपनी मंज़िल तक पहुँचाया। वो हमें समझाया करते थे कि हम नम्रता, प्रेम और आदरभाव से अपनी ज़िंदगी गुज़ारें और एक ऐसी ज़िंदगी जियें जोकि प्यार और मोहब्बत की बुनियाद पर आधारित हो।

हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के पास तरह-तरह के लोग आते थे। भारतवर्ष से भी और भारतवर्ष से बाहर के भी। उन्होंने उनका ध्यान प्रभु की ओर किया और उनके अंदर जो प्रभु का शब्द चल रहा है उसके साथ जोड़ा और उनकी ज़िंदगी में एक बदलाव ला दिया। वो चाहते थे कि जिस मकसद से हम यहाँ इस धरती पर भेजे गए हैं, वो मकसद हम सबका पूरा हो। उनकी शिक्षाएं आज भी हमारे सामने हैं और लाखों-करोड़ों लोग आज भी उनके बताए हुए रास्ते पर चल रहे हैं। हम उनको याद करें, उनके बताए हुए रास्ते को अपनी ज़िंदगी में ढालें, तभी सही मायने से हम उनके प्रकाश दिवस को मना सकेंगे।÷ उनके इस पावन संदेश को यू-ट्यूब पर हजारों लोग देख व सुन रहे थे। बाबा सावन सिंह जी महाराज का जन्म 27 जुलाई, 1858 में ग्राम महिमा सिंह वाला, जिला लुधियाना में हुआ।

उनके पश्चात परम संत कृपाल सिंह जी महाराज और दयाल पुरुष संत दर्शन सिंह जी महाराज ने देश-विदेश की यात्राएं करके उनके रूहानियत के इस कार्य को दुनिया के कोने-कोने में फैलाया और आज भी उसी रूहानी कार्य को सावन कृपाल रूहानी मिशन के वर्तमान सतगुरु परम संत राजिन्दर सिंह जी महाराज विश्वभर में अनेक यात्राएं कर लाखों लोगों को ध्यान-अभ्यास की विधि सिखा रहे हैं, जिससे कि हम अपने मनुष्य जीवन का परम ध्येय जोकि अपने आपको जानना और पिता-परमेश्वर को पाना है, को इसी जीवन में पूरा कर सकें। इस अवसर पर शांति अवेदना सदन, राज नगर, नई दिल्ली में भी कैंसर पीड़ित भाई-बहनों को मिशन की ओर से दवाईयाँ, फल व अन्य उपयोगी वस्तुओं का मुफ्त वितरण किया गया।

सावन कृपाल रूहानी मिशन के अध्यक्ष संत राजिन्दर सिंह जी महाराज आज संपूर्ण विश्व में ध्यान-अभ्यास द्वारा प्रेम, एकता व शांति का संदेश प्रसारित कर रहे हैं, जिसके फलस्वरूप उन्हें विभिन्न देशों द्वारा अनेक शांति पुरस्कारों के साथ-साथ पाँच डॉक्टरेट की उपाधियों से भी सम्मानित किया जा चुका है। सावन कृपाल रूहानी मिशन के आज संपूर्ण विश्व में 3000 से अधिक केन्द्र स्थापित हैं तथा मिशन का साहित्य विश्व की 55 से अधिक भाषाओं में प्रकाशित हो चुका है। इसका मुख्यालय विजय नगर, दिल्ली में है तथा अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय नेपरविले, अमेरिका में स्थित है।

खुद का कारोबार करने की ख्वाहिश रखते हैं भारतीय युवा

ऑफिस में आठ से दस घंटे काम करने के बाद भी मनचाही तन्ख्वाह न मिलने और दिन-प्रतिदिन जिंदगी की जरूरतों के बढ़ते रहने के बीच एक ही विकल्प बचता है और वह है खुद का कारोबार कर अच्छा मुनाफा कमाना. भारत में भी खुद का कारोबार करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है.

भले ही विश्व में नौकरी की संभावाएं कम होती नजर आ रही हैं, लेकिन कैरियर को सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंचाने के लिए भारतीय युवाओं में खुद का कारोबार करने का जज्बा तेजी से बढ़ रहा है. इतना ही नहीं अन्य देशों के युवाओं की अपेक्षा भारतीय युवा जल्द ही अपने व्यवसाय को व्यवस्थित करने की ख्वाहिश रखते हैं.

हाल में चार्टर्ड इंस्टीटयूट ऑफ मैनेजमेंट एकाउंट्स द्वारा वैश्विक स्तर पर किये गये एक सर्वेक्षण में यह बात सामने आयी है कि भारतीय युवा 33 वर्ष की आयु में अपना खुद का कारोबार करना चाहते हैं, जबकि अन्य देशों के युवा 36 वर्ष की आयु में ऐसा करने की ख्वाहिश रखते हैं. सर्वे में यह तथ्य भी सामने आया है कि 34 प्रतिशत युवा 30 वर्ष कि आयु तक सीनियर मैनेजर के पद पर कार्य करना चाहते हैं, वहीं 17 प्रतिशत युवा अपने ही बॉस जैसा यानी निदेशक बनना चाहते हैं. 67 प्रतिशत युवा ऐसे संस्थान में काम करना पसंद करते हैं, जो उन्हें अच्छी तनख्वाह दे. वहीं 36 प्रतिशत युवा ऐसा करोबार करने को प्राथमिकता देते हैं, जो अपने देश के साथ उन्हें विदेश में भी तरक्की पाने का अवसर प्रदान करे.

मल्टीनेशनल कंपनी में काम करनेवाले 31 वर्षीय साहिल शर्मा कहते हैं कि आज के दौर में रिस्क तो हर जगह है, लेकिन सोची-समझी प्लानिंग के साथ अपने कारोबार में लिया गया रिस्क अकसर लोगों को कम समय में अधिक मुनाफा दिला देता है. वहीं नौकरी करनेवालों की बात करें, तो वे पूरी लगन के साथ काम करते हैं, लेकिन उनकी मेहनत का प्रॉफिट उन्हें मिलने की बजाय कंपनी को मिलता है. जाहिर है कि खुद का कारोबार करना किसी कपंनी में नौ से पांच की नौकरी करने से कहीं ज्यादा बेहतर है. दो वर्षो से गारमेंट्स का बिजनेस चलानेवाली 29 वर्षीय गरिमा माथुर भी खुद के कारोबार को नौकरी से ज्यादा बेहतर बताती हैं. गरिमा कहती हैं कि तीन साल नौकरी करने के बाद ही मैंने अपना खुद का व्यवसाय करने का फैसला किया. मेरे लिए यह मुनाफा कमाने के साथ-साथ अपनी पहचान बनाने का भी बेहतरीन जरिया बन गया. अब यह सोच कर अच्छा लगता है कि सही समय पर मैंने सही फैसला लिया और सही समय पर अपने कारोबार को स्थापित कर लिया. यदि आज भी मैं नौकरी करती रहती, तो शायद मुझे तनख्वाह के रूप में 20 से 25 हजार या ज्यादा-से-ज्यादा 35 से 40 हजार रुपये ही हर महीने मिल रहे होते. लेकिन अपना कारोबार करने का मैंने फैसला करके आज मैं हर महीने लाखों का मुनाफा कमा रही हूं.

फाइनांशियल मार्कीट्स में असीमित अवसर

अनेक उतार-चढ़ाव तथा रिटेल निवेशकों के निम्न आधार के बावजूद बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज एशिया का छठा तथा विश्व का 14वां सबसे विशाल मुद्रा बाजार है। देश में कुछ अन्य स्टॉक एक्सचेंज के अलावा दुनिया भर में अनेक स्टॉक एक्सचेंज मौजूद हैं जहां हर दिन अरबों-खरबों का लेन-देन होता है। इस क्षेत्र में कार्य करने वालों के पास उज्ज्वल करियर बनाने के असीमित अवसर होते हैं। वित्तीय सेवा पेशेवरों की मांग अब केवल स्टॉक ब्रोकरेज फर्मस तक ही सीमित नहीं है बल्कि बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थानों में भी उनकी काफी जरूरत होती है।

फाइनांशियल मार्कीट्स से संबंधित कोर्सों के तहत छात्रों को बाजार को बेहतर ढंग से समझने तथा मिलने वाले मौकों का अधिक से अधिक लाभ उठाने का कौशल प्रदान किया जाता है। अनेक संस्थान इस विषय से संबंधित नवीन कोर्स शुरू कर रहे हैं जिनसे छात्रों को इस क्षेत्र के बारे में नवीनतम बदलावों से जागरूक करवाया जाता है।

सम्भावनाएं

जो छात्र फाइनांशियल मार्कीट्स संबंधी कोर्स सफलतापूर्वक करते हैं वे बैंकों में इन्वैस्टमैंट बैंकर्स या रिलेशनशिप मैनेजर, इंश्योरैंस कम्पनियों में वैल्थ मैनेजर के अलावा एनालिस्ट, पोर्टफोलियो मैनेजर, सर्विलांस / कम्प्लायंस / रैगुलेशन मैनेजर, डिजीटल कंटैंट डिवैल्पर्स एवं रिस्क मैनेजर के तौर पर भी कार्य कर सकते हैं।

शुरूआत

इस क्षेत्र में आमतौर पर युवाओं को बतौर एनालिस्ट नियुक्त किया जाता है। कार्पोरेट फाइनांस में वे मुख्यत- आंकड़ों का आकलन लगाने का काम करते हैं। वे फर्मस की फाइनांशियल रिर्पोटस का अध्ययन करते हैं। शोध में कार्य करने वाले एनालिस्ट कम्पनियों तथा सैक्टर्स की हल-चल पर नजर रखते हैं। एनालिस्ट्स को ट्रेडिंग करने की स्वीकृति नहीं मिलती जब तक वे अपनी योग्यता एवं कौशल को पूरी तरह सिद्ध नहीं कर देते हैं क्योंकि इस काम में गलती की जरा भी गुंजाइश नहीं होती है। यहां गलती भारी नुक्सान का कारण बनती है। अनुभव हासिल करने के बाद एनालिस्ट्स को एसोसिएट के पद पर नियुक्ति मिलती है। वैसे एम.बी.ए. डिग्री धारी सीधे इस पद पर भी नियुक्ति प्राप्त करते हैं। वे अपनी टीम में काम का बंटवारा तथा निरीक्षण का काम करते हैं। इसके बाद वे वाइस प्रैजीडैंट के पद पर पदोन्नत होते हैं जो एनालिस्ट तथा एसोसिएट्स के काम पर नजर रखते हैं। कस्टमर्स के अधिक करीब रहते हैं। प्रतिभाशाली सीनियर प्रैजीडैंट्स को एग्जीक्यूटिव डायरैक्टर, फिर मैनेजिंग डायरैक्टर के पदों पर नियुक्ति मिलती है। इस क्षेत्र में करियर की शुरूआत करने तथा अनुभव हासिल करने के लिए बेहतर होगा कि युवा किसी कम्पनी में बतौर इंटर्न काम शुरू करें।

नौकरी की तलाश में दूसरों को नुक्सान न पहुंचाएं

पेश हैं कुछ नियम जिनका पालन नौकरी के लिए आवेदन करने वाले हर व्यक्ति को करना चाहिए। अक्सर नौकरी तलाश करने वाले आवेदकों की शिकायत होती है कि इंटरव्यू के बाद उन्हें नियोक्ताओं की तरफ से कोई खबर नहीं मिलती है परंतु कुछ शिकायतें नियोक्ताओं की आवेदकों से भी होती हैं।

उनकी अक्सर शिकायत होती है कि आवेदन करने वाले कई सारे लोग साक्षात्कार के लिए पहुंचते ही नहीं जिसकी वे पहले कोई खबर भी नहीं देते हैं। ऐसे भी कई आवेदक हैं जिन्हें नौकरी दिए जाने के बाद वे ज्वाइनिंग ही नहीं करते और न ही इस बारे में कोई सूचना देते हैं। बेशक कुछ आवेदनकर्ताओं को किसी नौकरी में रुचि न रही हो या फिर उन्हें वह नौकरी अपने मतलब की न लगी हो या फिर तनख्वाह से वे संतुष्ट न हों परंतु इंटरव्यू पर न पहुंचने या नौकरी ज्वाइन नहीं करने की सूचना कम्पनी को जरूर देनी चाहिए।

उनके द्वारा बगैर बताए गायब हो जाने की बात से उन लोगों के लिए चीजें मुश्किल हो जाती हैं जो भविष्य में नौकरी के लिए आवेदन करते हैं इसलिए आवेदनकर्ता निम्न बातों का खास तौर पर ध्यान रखें।

- यदि आपको इंटरव्यू के लिए समय दिया गया है तो समय पर पहुंचें। यदि किसी वजह से आप इंटरव्यू पर नहीं पहुंच सकते हैं तो समय पूर्व फोन करके इसकी सूचना कम्पनी को दें।
- यदि आपको नौकरी पर रख लिया गया है तो काम पर समय पर पहुंचें या फिर समय रहते पर्याप्त कारण बताते हुए नौकरी न करने की सूचना कम्पनी को देना आवश्यक है।

बनाएं शोध के क्षेत्र में कैरियर

विज्ञान संकाय से पढ़ाई करनेवाले छात्रों के सामने एक तेजी से उभरता हुआ क्षेत्र है- बायोइन्फॉरमेटिक्स. विद्यार्थी की विज्ञान की पढ़ाई के साथ ही अगर शोध में रुचि हो, तो यह क्षेत्र उनके लिए काफी बेहतर साबित हो सकता है. कैरियर के तौर पर बायोइन्फॉरमेटिक्स के विभिन्न आयामों पर एक नजर..

मेडिकल साइंस में विकास के कारण बायोइन्फॉरमेटिक्स के प्रति युवाओं का रुझान बढ़ता जा रहा है. बायोइन्फॉरमेटिक्स इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी और बायोटेक्नोलॉजी से मिल कर बना है. इन दिनों बायोइन्फॉरमेटिक का इस्तेमाल मॉलिक्यूलर बायोलॉजी के क्षेत्र में खासतौर से किया जाता है. यह एक स्पेशलाइज्ड क्षेत्र है. विशेषज्ञों की मानें, तो इन दिनों बायोइन्फॉरमेटिक्स विशेषज्ञों की मांग आपूर्ति से कहीं ज्यादा है.

कैसा है काम

इस क्षेत्र से जुड़े पेशेवर कंप्यूटर टेक्नोलॉजी के माध्यम से बायोलॉजिकल डाटा का सुपरविजन और विश्लेषण करते हैं. साथ ही, इनका काम डाटा स्टोरेज करने के साथ-साथ एकत्र किये गये बायोलॉजिकल डाटा को एक-दूसरे के साथ मिलाना भी होता है. इन दिनों बायोइन्फॉरमेटिक्स का इस्तेमाल शोध के क्षेत्र में बहुत हो रहा है. इस क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए ह्यूमन हेल्थ, एग्रीकल्चर, इन्वायरनमेंट और ऊर्जा के क्षेत्र में काम करने का भी भरपूर मौका होता है. बायोमॉलिक्यूलर के क्षेत्र में बायोइन्फॉरमेटिक्स का इस्तेमाल दवाओं की क्वालिटी सुधारने के लिए किया जाता है.

क्या है योग्यता

विज्ञान संकाय से 12वीं पास करनेवाले छात्र बायोइन्फॉरमेटिक्स क्षेत्र में प्रवेश ले सकते हैं. यदि इस विषय में अपनी शोध क्षमताओं को और बेहतर करना चाहते हैं, तो ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएट में मॉलिक्यूलर बायोलॉजी, जेनेटिक्स, माइक्रोबायोलॉजी, केमिस्ट्री, फार्मेसी, वेटेरिनरी साइंस, फिजिक्स और मैथ्स जैसे विषय जरूर होने चाहिए.

रोजगार का क्षेत्र

इन दिनों हर क्षेत्र में तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है. विज्ञान का क्षेत्र इसमें सबसे आगे है. इसलिए बायोइन्फॉरमेटिक्स से जुड़े लोगों की मांग इन दिनों तेजी से बढ़ रही है. खासकर जीवीके बायोसाइंसेस, एस्ट्राजेनेका, डॉ रेड्डी लेबोरेट्रीज, इनजेनोविस, जुबिलेंट बायोसेंस, लैंडस्काइ सॉल्यूशंस जैसी बड़ी कंपनियां हैं, जो अच्छा खासा मौका मुहैया करा रही हैं. इस क्षेत्र में सरकारी और निजी मेडिकल संस्थान, अस्पताल आदि में रिसर्च कार्यो के लिए बायोइन्फॉरमेटिक्स के क्षेत्र से जुड़े पेशेवरों को नियुक्त किया जाता है, लेकिन बायोइन्फॉरमेटिक्स से जुड़े लोगों के लिए फार्माक्यूटिकल उद्योग रोजगार का सबसे बड़ा क्षेत्र होता है.

इस क्षेत्र से जुड़े पेशेवर कुछ खास क्षेत्र में अपना बेहतरीन कैरियर बना सकते हैं, जैसे सीक्वेंस असेंबलिंग, सीक्वेंस एनालिसिस, प्रोटेओमिक्स, फार्माकोजेनोमिक्स, फार्माकोलॉजी, क्नीनिकल फार्माकोलॉजिस्ट, इन्फॉरमेटिक डेवलपमेंट, कंप्यूटेशनल केमिस्ट्री, बायोएनालिटिक्स, एनालिटिक्स आदि.

विशेषताएं, जो हैं जरूरी

दरअसल, बायोइन्फॉरमेटिक्स का क्षेत्र शोध से जुड़ा हुआ है. इसलिए इस क्षेत्र में कदम रखनेवाले विद्यार्थियों का जिज्ञासू प्रवृत्ति का होने के साथ-साथ उनमें ऑब्जेवशन स्किल होनी भी जरूरी है. इस क्षेत्र में सफल होने के लिए टीम भावना का होना भी जरूरी है.

कितना मिलेगा वेतन

बायोइन्फॉरमेटिक्स में पोस्ट ग्रेजुएट की डिग्री रखनेवाले विद्यार्थियों को शुरुआत में 12 से 20 हजार रुपये प्रति महीने मिल सकते हैं. सरकारी शोध संस्थानों से काम की शुरुआत करनेवाले विद्यार्थियों को शुरुआती दौर में थोड़े कम वेतन से संतोष करना पड़ता है. लेकिन उन्हें अलग से भी कई तरह के भत्ते मिलते हैं. आमतौर पर एमएनसी में इस क्षेत्र से जुड़े लोगों को अच्छा वेतन मिलता है.

opensearch

कोरोना तय करेगा राजनीतिक भविष्य...

पॉजिटिव आने पर फ्लोर टेस्ट से रोका जा सकता है

(हरीश गुप्ता)

जयपुर। अगस्त का महीना शुरू होते ही सभी को इंतजार रहता है स्वतंत्रता दिवस का। राजनीति से जुड़े लोगों को इस बार 15 से ज्यादा इंतजार 14 अगस्त का है। कारण उस दिन से विधानसभा का सत्र शुरू होना है। शायद यह किसी को पता नहीं कि एक चौथा खेमा ऐसा है जो सभी के होश उड़ा सकता है। चौथा खेमा कोरोना वायरस है। जी हां राजस्थान की राजनीति अब कोरोना तय करेगा। गौरतलब है उत्तर प्रदेश में एक मंत्री की कोरोना से मौत हो चुकी है। एजेंसी के मुताबिक केंद्रीय मंत्री अमित शाह भी पॉजिटिव आ गए हैं। वैसे भी जो पॉजिटिव आया उसे सदन में प्रवेश की अनुमति नहीं मिलेगी। हालांकि यह निर्भर करता है विधानसभा अध्यक्ष के फैसले पर।

जानकारी के मुताबिक राजनीतिक गलियारों में चर्चाएं जोरों पर है, %अगर विधानसभा अध्यक्ष ने सभी विधायकों की कोविड-19 जांच करवा दी तो कोरोना राजनीतिक संकट पैदा कर सकता है।% जो फ्लोर टेस्ट के सपने देख रहे हैं कोरोना उनके सपने तोड़ सकता है।

वर्तमान में राजस्थान का राजनीतिक संकट अभी गहराया हुआ है। इसमें गहलोत, सचिन और भाजपा के बीच कोरोना बड़ा पेंच बनकर उभर सकता है। अगर किसी विधायक की रिपोर्ट पॉजिटिव आ गई तो वह फ्लोर टेस्ट नहीं दे पाएगा। इसलिए ऐसी संभावना जताई जा रही है कि हार जीत की पैंतरेबाजी पर कोरोना भारी पड़ सकता है।

सूत्रों ने बताया कि इस सोच के पीछे कुछ नेताओं का तर्क है कि राज्यसभा के चुनाव के समय वाजिद अली ऑस्ट्रेलिया से आए थे। तब उनकी रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी। बाद में फिर से जांच करवाई गई। इस पर वे वोट देने आए थे, लेकिन भाजपा नेता राजेंद्र सिंह राठौड़ ने विरोध किया तो अली को पीपीई किट पहनाकर वोट दिलाया गया।

सूत्रों की मानें तो 14 अगस्त को भी ऐसे हालात देखने को मिल सकते हैं। हो सकता है कई विधायक पीपीई किट पहनकर आएं। हो सकता है कुछ पॉजिटिव आए तो उन्हें फ्लोर टेस्ट से भी रोका जा सकता है। ऐसे में दोनों खेमे जो सरकार बचाने में और दूसरा सरकार गिराने में लगा हुआ है, दोनों को कोरोना रूपी दुष्ट को मनाना होगा। बिल्कुल वैसे जैसे किसी शुभ कार्य की शुरुआत पर भैरूजी को मनाना होता है।

राष्ट्रीय एकता, बंधुत्व और सांस्कृतिक समागम का कार्यक्रम बने राम मंदिर का भूमि पूजन: प्रियंका गांधी

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने मंगलवार को कहा कि भगवान राम सबमें हैं और सबके हैं तथा ऐसे में पांच अगस्त को अयोध्या में मंदिर निर्माण के लिए होने जा रहा भूमि पूजन राष्ट्रीय एकता, बंधुत्व और सांस्कृतिक समागम का कार्यक्रम बनना चाहिए। गौरतलब है कि अयोध्या में बुधवार को राम मंदिर निर्माण के लिए भूमि पूजन कार्यक्रम आयोजित होगा, जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शामिल होने का कार्यक्रम है। कांग्रेस की उत्तर प्रदेश प्रभारी प्रियंका ने एक बयान में कहा, ''दुनिया और भारतीय उपमहाद्वीप की संस्कृति में रामायण की गहरी और अमिट छाप है। भगवान राम, माता सीता और रामायण की गाथा हजारों वर्षों से हमारी सांस्कृतिक और धार्मिक स्मृतियों में प्रकाशपुंज की तरह आलोकित है।'' उनके मुताबिक, भारतीय मनीषा रामायण के प्रसंगों से धर्म, नीति, कर्तव्यपरायणता, त्याग, उदात्तता, प्रेम, पराक्रम और सेवा की प्रेरणा पाती रही है। उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम तक रामकथा अनेक रूपों में स्वयं को अभिव्यक्त करती चली आ रही है। श्रीहरि के अनगिनत रूपों की तरह ही रामकथा हरिकथा अनंता है। उन्होंने कहा, ''युग-युगांतर से भगवान राम का चरित्र भारतीय भूभाग में मानवता को जोड़ने का सूत्र रहा है। भगवान राम आश्रय हैं और त्याग भी। राम सबरी के हैं, सुग्रीव के भी। राम वाल्मीकि के हैं और भास के भी। राम कंबन के हैं और एषुत्तच्छन के भी। राम कबीर के हैं, तुलसीदास के हैं, रैदास के हैं। सबके दाता राम हैं।'' प्रियंका ने कहा, ''गांधी के रघुपति राघव राजा राम सबको सन्मति देने वाले हैं। वारिस अली शाह कहते हैं जो रब है वही राम है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त राम को 'निर्बल का बल' कहते हैं। महाप्राण निराला 'वह एक और मन रहा राम का जो न थका' की कालजयी पंक्तियों से भगवान राम को 'शक्ति की मौलिक कल्पना' कहते हैं।'' उन्होंने इस बात पर जोर दिया, ''राम साहस हैं, राम संगम हैं, राम संयम हैं, राम सहयोगी हैं। राम सबके हैं, राम सबमें हैं। भगवान राम सबका कल्याण चाहते हैं। इसीलिए वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।'' कांग्रेस महासचिव ने कहा, '' आगामी 5 अगस्त, 2020 को रामलला के मंदिर के भूमिपूजन का कार्यक्रम रखा गया है।

बुजुर्गों को समय पर पेंशन दी जाए, वृद्धाश्रमों में लोगों को पीपीई, मास्क प्रदान किये जाएं : न्यायालय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को कहा कि बुजुर्ग लोगों को समय पर पेंशन दी जानी चाहिए और कोविड-19 महामारी के दौरान देशभर में वृद्धाश्रमों में रहने वाले लोगों को पीपीई, सैनिटाइजर और मास्क प्रदान किये जाएं। शीर्ष अदालत ने कहा कि बुजुर्ग लोग परेशानियों का सामना कर रहे हैं और प्रशासन को इस बात के लिए कदम उठाने चाहिए कि जहां उन्हें जरूरत हो, मदद पहुंचाई जाए। न्यायालय ने कहा कि अधिकारियों को उन्हें समय पर पेंशन का भुगतान सुनिश्चित करना चाहिए और वृद्धाश्रमों में रहने वालों को पीपीई किट दी जानी चाहिए। न्यायमूर्ति अशोक भूषण की अध्यक्षता वाली पीठ ने पूर्व केंद्रीय मंत्री और वरिष्ठ अधिवक्ता अश्विनी कुमार की याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि बुजुर्गों को समय से पेंशन का भुगतान किया जाना चाहिए। इससे पहले, कुमार ने कहा कि महामारी के दौरान बजुर्गों को समय पर पेंशन मिलना जरूरी है। उन्होंने शीर्ष अदालत से कहा कि करोड़ों बुजुर्ग अकेले रहे हैं और इस बात के लिए उचित निर्देश जारी किये जाने चाहिए कि पात्र लोगों को समय पर पेंशन मिले।केंद्र की तरफ से वरिष्ठ अधिवक्ता वी मोहन ने पीठ से कहा कि राज्य सरकारें इस दिशा में प्रयास कर रही हैं। मोहन ने याचिका पर जवाब दाखिल करने के लिए जब एक सप्ताह का समय मांगा तो कुमार ने विरोध करते हुए कहा कि इस मामले में तत्काल कार्रवाई की जरूरत है। पीठ ने एक अन्य याचिका पर भी सुनवाई की जिसमें कोरोना वायरस संक्रमित बुजुर्गों का उपचार बिना भेदभाव के करने का निर्देश देने की मांग की गयी है। पीठ ने राज्यों को याचिका पर जवाब दाखिल करने का भी निर्देश दिया।

राम मंदिरों में प्रचलित थी रामटंका नामक दुर्लभ मुद्राएं

इतिहासकार अमित राय जैन के संग्रह में मौजूद हैं राम मंदिरों की प्राचीन दुर्लभ रामटंका मुद्राएं

बड़ौत (ओपन सर्च)

सुप्रीम कोर्ट द्वारा राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण को हरी झंडी दिए जाने के बाद से भगवान श्री राम और उनके प्राचीन मंदिरों की परंपराओं पर नित नवीन खोज और अनुसंधान सामने आ रहे हैं, उसी श्रंखला में जनपद बागपत के बड़ौत नगर स्थित शहजाद राय शोध संस्थान के प्राचीन व दुर्लभ मुद्रा संग्रह में प्राचीन काल में राम मंदिरों के द्वारा प्रचलित दुर्लभ रामटंका नामक विभिन्न धातुओं से बनी दुर्लभ मुद्राएं संग्रहित की गई है । संस्थान के निदेशक इतिहासकार डॉ. अमित राय जैन के निजी संग्रह में मौजूद सैंकड़ों चांदी, तांबा, पीतल आदि धातुओं से निर्मित सैकड़ों साल प्राचीन राम मंदिरों में प्रचलित दुर्लभ रामटंका मुद्राओं का संग्रह भगवान राम के भक्तों के लिए कौतूहल व दर्शनीय बना हुआ है।

रामटंका मुद्राओं के विषय में शोध करने वाले इतिहासकार डॉ. अमित राय जैन ने इन मुद्राओं के विषय में जानकारी देते हुए बताया की यह मुद्राएं प्राचीन काल से राम मंदिरों में स्मृति स्वरूप आने वाले विशिष्ट अतिथियों को भेंट स्वरूप प्रदान की जाती थी जो कि आज वर्तमान में लोगों की श्रद्धा व राम मंदिरों की प्राचीन परंपरा का प्रतीक बनी हुई है। देश भर में जहां- जहां पर भी राम मंदिरों का निर्माण प्राचीन काल में हुआ, वहां पर हिंदू श्रद्धालुओं के द्वारा प्रसाद के रूप में वे उस मंदिर की स्मृति के रूप में वहां के मंदिर प्रबंधन द्वारा कुछ विशेष स्मृति मुद्राओं, जिनको की रामटंका टोकन कहा जाता है, उनका वितरण अतिविशिष्ट अतिथियों को वहां पर आगमन की स्मृति में भेंट स्वरूप प्रदान किया जाता था। उन्होंने बताया कि यह दुर्लभ मुद्राएं उन्होंने भारतवर्ष में अनेकों राज्यों में भ्रमण कर एकत्र की है या उन्हें उनके इतिहासकार मित्रों ने अन्य मुद्राओं की एवज में आदान-प्रदान के रूप में उन्हें भेंट स्वरूप प्रदान की है, जो कि आज भारत की प्राचीन धार्मिक मान्यताओं व राम मंदिरों में प्रचलित एक प्राचीन परंपरा का प्रतीक है।

रामटंका मुद्राओं के विषय में डॉ. अमित राय जैन का अनुसंधान यह भी बताता है कि भारत,नेपाल, बांग्लादेश, वर्तमान पाकिस्तान आदि अनेकों स्थानों पर आज भी भगवान राम को समर्पित रामटंका मुद्राएं मिलती हैं। इन स्मृति सिक्कों का निर्माण मंदिर प्रबंधन अपने स्थानीय ढलाई व मुद्रण कारीगरों द्वारा कराते थे। इन मुद्राओं की यह भी विशेषता है कि वहां की स्थानीय सांस्कृतिक कला की सूक्ष्मता भी इन स्मृति सिक्कों पर झलकती है। शहजाद राय शोध संस्थान में संग्रहित प्राचीनतम रामटंका करीब 500 वर्ष से 100 वर्षों के मध्य में निर्मित हुए जो कि विभिन्न काल खंडों में शासकों व विशिष्ट व्यक्तियों को राम मंदिर में पूजा अर्चना हेतु जाने पर वहां के महंतों या प्रबंधकों के द्वारा भेंट किए गए, जो कि कालांतर में अलग-अलग स्थानों पर आते हुए शहजाद राय शोध संस्थान में संग्रहित किए गए। आज भी इस तरह की रामटंका, जिनको कि कुछ लोग राम दरबार सिक्के भी कहते हैं, लोग अपनी जेब में रखते हैं और यात्रा के दौरान इन्हीं रामटंका के माध्यम से भगवान राम सीता लक्ष्मण हनुमान की जो छवि इन पर अंकित की गई है, के दर्शन करते हैं।

केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी ने बहनों से बंधवाई राखी, कोरोना संक्रमण के चलते लोगों से सावधानी की अपील

कृषि राज्यमंत्री कैलाश चौधरी ने दिया श्रीकृष्ण-द्रोपदी का उदाहरण, कहा- आज रिश्ता निभाने वाले लोगों की आवश्यकता

बालोतरा (बाड़मेर)

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री कैलाश चौधरी ने सोमवार को अपने बालोतरा स्थित आवास पर रक्षाबंधन का पर्व सादगी से मनाया। केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी की बहनों ने उन्हें तथा उनके छोटे भाई को राखी बांधी। चौधरी की बहनों ने कृषि राज्यमंत्री को रोली का टीका लगाकर, हाथ में नारियल देकर तथा आरती कर पारंपरिक अंदाज में राखी बांधी। [illegible] सबने एक-दूसरे [illegible] उपह[illegible] दिए और हंसते-मुस्कुराते [illegible] पुरानी यादों को ताजा किया। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी के पिताजी सहित परिवार के बच्चें एवं अन्य सदस्य भी मौजूद [illegible]। इस अ[illegible]सर [illegible] कृ[illegible] राज्य मंत्री [illegible] चौधरी ने कहा कि रक्षाबंधन हिंदू [illegible] सबसे [illegible] ऐतिहासिक त्योहार है। उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण एवं द्रोपदी के भाई बहन के रिश्ते का उल्लेख करते हुए कहा कि समाज में इसी प्रकार से भाई-बहन के रिश्ते को निभाने वा[illegible] [illegible] का आवश्यकता है। केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी ने कहा कि जनसेवा में व्यस्त रहने के कारण अक्सर परिवार से दूर रहना होता है। ऐसे में रक्षाबंधन जैसे त्यौहार पर पूरे परिवार का हंसी-खुशी के माहौल में मिलना प्रेम और अपनेपन की भावना को मजबूत बनाता है। इससे आमजन से जुड़ाव और देशसेवा की भावना भी उत्तरोत्तर बढ़ती है।

श्री कैलाश चौधरी ने देशवासियों को रक्षाबंधन की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि कोरोना महामारी का प्रभाव होने के चलते इस त्यौहार को मनाने की खुशी के साथ ही अतिरिक्त सावधानी बरतने की अपील करता हूँ। साथ ही उन भाई-बहनों को भी भरोसा दिलाता हूँ जो इस संक्रमण के कारण एक दूसरे को राखी नहीं बांध पाए हैं। ईश्वर की कृपा से जल्दी ही अच्छा समय आएगा और भारत सहित दुनिया भर से इस महामारी का खात्मा होगा।

आजाद भारत का सबसे ऐतिहासिक क्षण होगा श्रीराम मंदिर का भूमि पूजन : कैलाश चौधरी

कृषि राज्यमंत्री कैलाश चौधरी ने 5 अगस्त की शाम को आमजन से किया दीपोत्सव मनाने का आह्वान, कहा- 'यह हम सभी के लिए उत्सव और उल्लास का समय

नई दिल्ली/जयपुर। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री कैलाश चौधरी ने आज रामनगरी अयोध्या में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए होने वाले भूमिपूजन की खुशी में लोगों से दीपोत्सव मनाने का आह्वान किया है। कृषि राज्यमंत्री कैलाश चौधरी ने आमजन से अपील की है कि जिस प्रकार श्रीराम के 14 वर्ष के वनवास काटने के बाद नगर आगमन पर प्रजा ने पूरी अयोध्या को दीपों से सजाया था, उसी प्रकार श्रीराम मंदिर के भूमिपूजन पर 5 अगस्त की शाम को अपने घर, गली एवं आसपास के स्थानों को दीपों से सजाया जाए।

केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी ने लोगों से 11 या 21 दीप अपने-अपने घरों के मुख्य द्वारों पर जलाने का आग्रह किया है। श्री कैलाश चौधरी ने कहा कि 500 सालों के संघर्ष के बाद भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर निर्माण की प्रक्रिया शुरु होने जा रही है। ऐसे में इन ऐतिहासिक क्षणों का पूरा देश साक्षी बनने जा रहा है। यह हम सभी के लिए उत्सव और उल्लास का समय है। केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी ने कहा कि आज अयोध्या में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों श्रीराम मंदिर के भूमिपूजन का दिन आजाद भारत का सबसे ऐतिहासिक क्षण होगा। चौधरी ने कहा कि राम मंदिर के मुद्दे पर देश के संघर्ष को देखते हुए कई पीढियां गुजर चुकी है। अब जाकर वो मौका आया है जब राम मंदिर का सपना साकार होने जा रहा है। मंदिर निर्माण की राह में कांग्रेस ने अटकाए रोड़े - केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री श्री कैलाश चौधरी ने कांग्रेस पर तंज कसते हुए कहा कि कांग्रेस की सरकारों ने हमेशा श्रीराम मंदिर निर्माण की राह में रोड़ा अटकाने का काम किया है। यहां तक कि कांग्रेस के कई नेता तो भगवान श्रीराम को काल्पनिक तक बता चुके हैं, लेकिन अब जब मोदी सरकार की प्रतिबद्धता और आमजन की भावनाओं के अनुरूप सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

निंदा करने व सुनने से बचे

मनीषीश्रीसंतमुनिविनयकुमार जी आलोक

चंडीगढ (ब्यूरो) अगस्त ज्यादातर लोग निंदा के छोटे-छोटे तीरों और भालों को जरूरत से ज्यादा गंभीरता से लेते हैं। अक्सर निंदा करने वाले लोग नकारात्मक भावों से ग्रस्त रहते हैं और अपने जीवन को भी बोझ बना लेते हैं। इसके विपरीत सफल, प्रसन्न, स्वस्थ और प्रभावशाली व्यक्ति हर समय सकारात्मक और ऊर्जायुक्त विचारों का ही प्रयोग करते हैं। इसलिए वे बाधाओं पर भी सहजता से विजय पा लेते हैं। स्वास्थ्य अनुसंधानों से यह प्रमाणित हुआ है कि जो व्यक्ति सकारात्मक विचारों को महत्व देते हैं उनमें इंडोर्फिन नामक हार्मोन अधिक पाया जाता है। अरुणिमा सिन्हा ने जब एक दुर्घटना के बाद माउंट एवरेस्ट पर चढने की बात कही तो निंदकों ने उन्हें मानसिक रूप से बीमार तक कह डाला था। उन्होंने निंदा की चिंता न करते हुए इस बात की चिंता की कि वह कैसे एवरेस्ट के शिखर तक पहुंच सकती हैं। इसलिए जब कोई आपकी निंदा करे तो धैर्य, मुस्कराहट का छाता खोलकर निंदा की बारिश से स्वयं को बचाएं और जीवन सफल बनाएं। लोगों द्वारा की जाने वाली निंदा से विचलित हुए बगैर अपने पथ पर आगे बढ़ते रहें, निश्चित रूप से सफलता आपकी झोली में होगी और निंदकों का मुंह बंद हो जाएगा। ये शब्द मनीषीसंतमुनिश्रीविनयकुमार जी आलोक ने कहे।

मनीषीश्रीसंत ने आगे कहा हर व्यक्ति की आकांक्षाएं, सपने, इच्छाएं और शौक होते हैं। कई बार व्यक्ति के शौक उसके व्यक्तित्व के विपरीत होते हैं। मसलन साधारण रूप-रंग वाले भी मॉडलिंग और फिल्म जगत में अपना नाम कमाने की इच्छा रखते हैं, लेकिन कई यह सोचकर इस बात को अपने दिल के कोने में दबा देते हैं कि उनकी इस इच्छा को देखकर लोग उनके बारे में क्या कहेंगे? इसी तरह यदि कोई व्यक्ति कुप्रवृत्तियों की चपेट में आकर गलती कर बैठता है तो उसका पूरा परिवार स्वयं को समाज से काटकर तनाव का शिकार होकर घातक कदम उठा लेता है।

इस बारे में एक प्रसिद्ध विद्वान ने यह निष्कर्ष निकाला था कि 'लोग क्या कहेंगे' यह बात व्यक्ति अपने मन से निकाल दें, क्योंकि लोग किसी के बारे में कुछ नहीं सोचते हैं।

यदि सोचते तो दुनिया में परेशानी नाम की कोई चीज नहीं होती। जिनका काम सिर्फ कुछ न कुछ कहना है, वह तो कहते ही रहेंगे। इसलिए सोचने के बजाय आप अपना काम करें, क्योंकि वह न तो आपकी सफलता के लिए मदद करेंगे और न ही असफलता में मदद करने आएंगे। मनीषीश्रीसंत ने अंत मे फरमाया सार्थक और सकारात्मक जीवन जीने के लिए ज्यादा परिश्रम की जरूरत नहीं है। प्राय- लोग इसके लिए भटकते फिरते हैं, जबकि हर इंसान के पास दिमाग है जो पूरे शरीर को तो संचालित करता ही है और वही जीवन की यात्रा भी तय करता है। कोई विपरीत स्थितियों और परिस्थितियों के बावजूद अपने दिमाग का सही और सटीक प्रयोग करके ऊंची उपलब्धियां हासिल कर लेता है और कोई सारी सुविधाओं के बावजूद असफल रहता है। हर व्यक्ति को सबसे पहले सुनने की आदत डालनी चाहिए। - जो व्यक्ति सुनता कम है और बोलता ज्यादा है, वह आगे बढने के तमाम अवसरों से चूक जाता है। हमारे ऋषियों मुनियों ने शुभ और सुखद सुनने की कला बताई है। जब व्यक्ति विद्वानों, श्रेष्ठजनों और गुरुओं की बातें सुनता है तो शब्द रूपी ब्रह्म कानों से प्रवेश कर मस्तिष्क में रासायनिक परिवर्तन करते हैं। मस्तिष्क में अच्छी-अच्छी बातें आती हैं।

उप्र में शराब तस्करों का पीछा करते 2 पुलिसकर्मी घायल

बागपत (उत्तर प्रदेश).एजेंसी शराब तस्करों द्वारा अपने वाहनों के नीचे कुचल दिए जाने से खुद को बचाने की कोशिश में एक सब-इंस्पेक्टर सहित एक कॉन्स्टेबल को गंभीर चोटें आई हैं। यह घटना सोमवार को बागपत के निवाड़ा गांव के पास हुई। घायल पुलिसकर्मियों को जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हें अब खतरे से बाहर बताया गया है।

खबरों के मुताबिक, बागपत पुलिस को सीमा क्षेत्र में शराब की तस्करी की सूचना मिली थी। निवाड़ा चेकपोस्ट पर गाड़ियों की चेकिंग करते वक्त पुलिस ने एक विशेष वाहन को रोकने के लिए कहा। हालांकि गाड़ी ने बैरिकेड को तोड़कर भागने की कोशिश की, जिसके चलते चौकी प्रभारी बलराम सिंह ने कॉन्स्टेबल रोहित कुमार के साथ उस गाड़ी का पीछा किया और कुछ किलोमीटर की दूरी पर अपनी मोटरसाइकिल से गाड़ी के ठीक सामने आकर उनका रास्ता रोका। कार चालक ने बाइक के ऊपर अपनी गाड़ी चढ़ा दी, जिससे दो पुलिसकर्मी सड़कों के किनारे गिर पड़े और जख्मी हो गए। बागपत के एएसपी अजय कुमार ने कहा, हमने गाड़ी का पता लगाने के लिए टीमों का गठन किया है। दो पुलिसकर्मियों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हरियाणा बॉर्डर के करीब होने के कारण इलाके में सीमा पार से अवैध शराब की तस्करी बड़े पैमाने पर की जा रही है।

प्रभाताई ओझा स्मृति आरोग्य कार्ड का वितरण

नागपुर (ओपन सर्च)

प्रभाताई ओझा स्मृति सेवा संस्था एवं विप्र फाउंडेशन नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में प्रभाताई ओझा स्मृति विप्र आरोग्य कार्ड का वितरण महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष एंव महसूल मंत्री महाराष्ट्र राज्य बालासाहेब थोरात के कर कमलों से किया गया। इस अवसर पर नितिन राऊत, पालकमंत्री नागपुर, मंत्री सुनील केदार उपस्थित थे।

रामकिशन ओझा, महासचिव महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी व अध्यक्ष प्रभा ताई संस्था ने आरोग्य कार्ड की जानकारी मे बताया कि यह कार्ड अस्पतालों में इलाज के लिए आर्थिक छुट प्राप्त करने में सहायक होंगे। इससे नागपुर के जाने माने हॉस्पिटल में चिकित्सा सुविधा में विशेष छुट मिलेगी। अपने उद्बोधन में बालासाहेब थोरात ने प्रभाताई ओझा स्मृति सेवा संस्था द्वारा किये जा रहे कार्यो की प्रशंसा की और इसे नियमित जारी रखने की अपील की। नितिन राऊत ने आज के समय मे आरोग्य कार्ड को जनता की जरुरत बताया। साथ ही कहा, इससे हॉस्पिटल में होने वाले इलाज मे सहयता मिलेगी। इस कार्ड के माध्यम से समाज के लोग अलग अलग अस्पतालों में विभिन्न तरह की चिकित्सा या दवाईयों पर आर्थिक छुट प्राप्त कर सकते हैं। विप्र फाउण्डेशन नागपुर इकाई के अध्यक्ष विश्वजीत भगत परिवार ने बताया कि अबतक नागपुर शहर के लगभग 70 से अधिक अस्पतालों में इस आरोग्य कार्ड का इस्तेमाल किया जा सकता है। नागपुर शहर के ज्यादा से ज्यादा अस्पतालों को इसमें शामिल किया जा रहा है। इस अवसर पर मंत्री सुनील केदार, आमदार विकास ठाकरे, आमदार वजाहत मिर्ज़ा, आमदार राजू पारवे, आमदार सहसराम कोराटे, माज़ी मंत्री राजेंद्र मुलिक़, माज़ी मंत्री रमेश बंग, अतुल कोटेचा, महेंद्र शर्मा, महेश पुरोहित, जयप्रकाश पारीक, संजय पालीवाल, हेमंत शर्मा, रीतु आनन्द शर्मा आदि अनेक सदस्य गण एवं महिलाएं उपस्थित थे।

कोरोना वायरस के स्ट्रेन में बहुत कम परिवर्तनशीलता : अध्ययन

नई दिल्ली.एजेंसी। कोविड-19 के टीके पर काम कर रहे वैज्ञानिकों के लिए यह खबर अच्छी हो सकती है कि एक नये अध्ययन के अनुसार इस बीमारी को फैलाने वाले सार्स-सीओवी-2 वायरस के कम से कम छह प्रकार (स्ट्रेन) होने के बाद भी यह बहुत कम परिवर्तनशीलता प्रदर्शित करता है। पत्रिका 'फ्रंटियर्स इन माइक्रोबायलॉजी' में प्रकाशित और सार्स-सीओवी-2 पर अब तक के सबसे गहन अध्ययन में कोरोना वायरस के 48,635 जीनोम का विश्लेषण किया गया है। इन जीनोम को दुनियाभर में अनुसंधानकर्ताओं ने प्रयोगशालाओं से प्राप्त किया। इटली के बोलोना विश्वविद्यालय के अनुसंधानकर्ताओं ने वायरस के सभी महाद्वीपों में फैलने के दौरान इसके फैलाव और उत्परिवर्तन की मैपिंग की।

आग्रहहीन गहन चिंतन का द्वार हमेशा खुला रहे : आचार्य महाश्रमण

- **पूज्य प्रवर ने बताया यथार्थ को जानने व यथार्थ तक पहुंचने का तरीका??**
- **जैन सिद्धांत नयवाद का आचार्यश्री ने किया विवेचन??**

हैदराबाद (ओपन सर्च) अपनी ओजस्वी वाणी से ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले अहिंसा यात्रा प्रणेता परम श्रद्धेय शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आज जैन आगम ठाणं प्रवचन माला के अन्तर्गत व्याख्या करते हुए बताया कि यथार्थ को जानने व यथार्थ तक पहुंचने का एक तरीका है - नयवाद । यथार्थ की जानकारी व यथार्थ तक पहुंचने के बाद इसमें आग्रह तो ठीक है पर दुराग्रह ठीक नहीं ।अनाग्रह के साथ खोज हो, शोध हो और बोध मिलने के बाद आग्रह भी सही हो सकता है।सत्याग्रह सत्य का आग्रह भी अनाग्रह की श्रेणी में आ जाता है।अनाग्रह यथार्थ की खोज के लिए आवश्यक है। ठाणं आगम में सात प्रकार के मूल नय का उल्लेख मिलता है 7 पहला है - नैगम नय जिसमें भेद और अभेद का सपष्टीकरण होता है। दूसरा है - संग्रह । जिसमें केवल अभेद को देखा जाता है । सारा विश्व एक है, सब

मानव एक है, पशु ही प्राण व प्राणीत्व की दृष्टि से एक है।भेद में अभेद खोजना। तीसरा - व्यवहार नय ।

इसमें भेद की खोज की जाती है। वर्तमान को मुख्य रूप से देखा जाता है व इसमें अभेद में भेद को खोजने की बात है। चौथा - ऋजुसूत्र जहाँ वर्तमान को ग्रहण करने की बात होती है। अतीत को छोड़ो, वर्तमान को ही देखो । पांचवां है - लिंग वचन नय । एक वचन, बहु वचन आदि का बोध कराने वाला शब्द । छठा नय है - समभिरूढ़ नय - अर्थात कोई शब्द किसी का पर्यायवाची नहीं होता उत्पत्ति के हिसाब से सब एक हैं । सातवाँ - केवलभूत अर्थात जो जिस समय जो कार्य करता है, उस समय उसका वही रूप होता है जैसे साधु गोचरी को जाए तब भिक्षु, शिक्षक स्कूल में जब शिक्षा दे उस समय शिक्षक। पूज्यवर ने गीत के माध्यम से प्रेरित करते हुए कहा कि यथार्थ को जानने के लिए हम अभिप्राय पर ध्यान दें व संदर्भ की भी उपेक्षा न करें ।

दृष्टिकोण आदमी का यथार्थ परक हो कि हम बात को कैसे समझे, कोनसी बात किस भूमिका से, किस दृष्टिकोण से कहीं गई हैं। शब्द तो एक साधन है, शब्द के माध्यम से ठीक अर्थ को पकड़ने का मनोभाव रखें।

In association with
JEWELLERY NET
JEWELLERY & GEM HYDERABAD 13th edition
JEWELLERY & GEM DELHI 9th edition
informa markets
WELCOME TO JEWELLERY & GEM VIRTUAL EXHIBITION
INDIA'S FIRST B2B ONLINE JEWELLERY EXHIBITION
opensearch
BLOCK YOUR DATES
19th & 20th August 2020
12:00 NOON – 08:00 P.M.
Powered by
VK JEWELS PVT.LTD.
FINESTEE
Key Exhibitors
YUG
Machinery Partner
RMI RAVI MALVIYA INDUSTRIES
Association Partners
Knowledge Partner
The Art of Jewellery
Media Partners
JNI
JEWELLERY INFOMEDIA
S. N. PUBLICATION
Contact: +91 77009 07363